हरिभूमि
हिसार-हांसी भूमि
रोहतक, रविवार 25 अक्टूबर 2026

12 अग्रोहा धाम में वार्षिक मेला आज, भव्य तैयारियां पूरी



12 100 मीटर में लिछमी और वीरेंद्र ने मारी बाजी



खबर संक्षेप

दो पिस्तौल व 3 कारतूस के साथ युवक गिरफ्तार

हिसार। सीआईए मिल गेट की टीम ने दुर्जनपुर से एक युवक को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से 30 बोर के दो अवैध पिस्तोल व तीन जिंदा कारतूस बरामद किए हैं। आरोपी की पहचान असरावां निवासी मनोज के रूप में हुई है। सीआईए मिल गेट प्रभारी जगदीश कुमार के अनुसार, पुलिस टीम को गुप्त सूचना मिली थी कि मनोज नामक व्यक्ति के पास अवैध हथियार हैं। सूचना के बाद टीम ने तुरंत कार्रवाई की और आरोपी को काबू कर लिया। तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 30 बोर के दो अवैध पिस्तोल व तीन जिंदा कारतूस बरामद हुए।

बोलेरो कैंपर से 38 पेटी बीयर बरामद, एक काबू

हिसार। सदर पुलिस ने गांव शाहपुर में नाकाबंदी के दौरान एक बोलेरो कैंपर से अलग-अलग ब्रांड की बीयर की 38 पेटियां बरामद की हैं। पुलिस ने मौके से एक आरोपी को गिरफ्तार कर वाहन को भी अपने कब्जे में ले लिया है। सदर थाना के पीएसआई विकास कुमार ने बताया कि वह शाहपुर क्षेत्र में मौजूद थे। इसी दौरान टीम को गुप्त सूचना मिली। सूचना के आधार पर पुलिस ने तुरंत कार्रवाई करते हुए नाकाबंदी की और एक बोलेरो कैंपर को रुकवाकर उसकी तलाशी ली। तलाशी के दौरान वाहन से अलग-अलग ब्रांड की बीयर की 38 पेटियां बरामद हुईं। पुलिस ने बीयर की खेप और वाहन को अपने कब्जे में लेकर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। गिरफ्तार आरोपी की पहचान काबरेल निवासी सुनील के रूप में हुई है।

ओशो दिव्य प्रेम शिविर 30 अक्टूबर से

हिसार। ओशो की देशनाओं से साक्षात्कार करवाने और ध्यान व प्रेम का महत्व समझाने के लिए ओशो ध्यान उपवन में तीन दिवसीय ओशो दिव्य प्रेम शिविर आयोजित किया जाएगा। 30 व 31 अक्टूबर एवं 1 नवंबर को आयोजित होने वाले शिविर में स्वामी चंद्रशेखर ध्यान व प्रेम के विविध आयामों से परिचय करवाएंगे। ओशो दिव्य प्रेम शिविर के आयोजक स्वामी संजय ने बताया कि 30 अक्टूबर से शुरू होने वाले तीन दिवसीय शिविर में विभिन्न क्षेत्रों से साधक बढ़-चढक़र हिस्सा लेंगे। उन्होंने कहा कि इस दौरान साधकों को ओशो की देशनाओं से रूबरू होने का अवसर मिलेगा। इसके साथ ही ध्यान की विभिन्न विधियों को सीखने व उनका अभ्यास करने का भी मौका मिलेगा।

20 कंकालों के डीएनए रहस्य से जल्द उठेगा पर्दा, देश की ही प्रयोगशालाओं में चल रहा परीक्षण, प्राचीन डीएनए शोध से नया खुलासा

12 हजार साल पहले दो समूहों में बंटे थे लोग राखीगढ़ी पहुंचे दल ने खुद शुरू की थी खेती

सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोग ही हमारे पूर्वज, अंतरराष्ट्रीय राखीगढ़ी महोत्सव में प्रख्यात पुरातत्वविद् डॉ. शिंदे ने पत्रकारों से की बातचीत

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौंद

सरस्वती-सिंधु सभ्यता के प्रमुख पुरातात्त्विक स्थल राखीगढ़ी में चल रहे अध्ययनों से कृषि, पशुपालन, भोजन और प्राचीन शहरी जीवन को लेकर कई महत्वपूर्ण तथ्य सामने आ रहे हैं। शोध के अनुसार, इस सभ्यता के लोग शुरुआत से केवल किसान नहीं थे, बल्कि भूख मिटाने के लिए सीधे प्रकृति से भोजन प्राप्त करते थे।

वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि दक्षिण एशिया में 12 हजार साल पहले शिकार करने और भोजन इकट्ठा करने (हंटिंग-गैदरिंग) वाले लोग अलग-अलग झुंडों में रहते थे। बाद में वे दो समूहों में बंट गए जिनमें से कुछ लोग खेतीहर ईरान चले गए और कुछ राखीगढ़ी में आकर बस गए। राखीगढ़ी में मिले कंकाल का डीएनए करीब साढ़े चार हजार वर्ष पुराना पाया गया है। खास बात यह है कि इस डीएनए में किसी बाहरी व्यक्ति या समुदाय का अंश नहीं मिला। आज राखीगढ़ी समेत देश के अलग-अलग हिस्सों के लोगों के डीएनए जांचने पर बाहरी लोगों का मिश्रण तो दिखता है, लेकिन सबसे अधिक हिस्सा सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों के डीएनए का ही मिलता है। इससे यह स्पष्ट होता है कि इस सभ्यता के लोग ही हमारे पूर्वज थे।



दुनिया की सबसे बड़ी साइट

यद्यपि देश और विदेश में इस सभ्यता के कई स्थल मिले हैं, लेकिन राखीगढ़ी सबसे बड़ी साइट है। डीएनए का साक्ष्य अभी तक केवल इसी साइट से प्राप्त हो सका है। प्राचीन लोग कैसे दिखते थे, उनका खान-पान क्या था और उनकी मृत्यु किन कारणों से हुई थी, इन सभी बातों का पता लगाने के लिए विभिन्न लैब में डीएनए के आधार पर प्रयोग किए जा रहे हैं। राखीगढ़ी में आए लोगों ने खुद ही खेती की शुरुआत की थी, क्योंकि इससे पहले यहां किसी उन्नत खेती के साक्ष्य नहीं मिले हैं। यह कहा जा सकता है कि इस सभ्यता के लोगों ने ही खेती की शुरुआत की। वहीं, संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप के अलग-अलग क्षेत्रों में कृषि और पशुपालन का विकास अलग-अलग समय पर हुआ।

खेतीहर ईरान से गहरा संबंध

बीरबल साहनी इंस्टीट्यूट, लखनऊ के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. नीरज राय के अनुसार, दुनिया भर के डीएनए नमूनों से मिलान करने पर पाया गया कि राखीगढ़ी और खेतीहर ईरान के डीएनए का आपस में गहरा संबंध था। ये दोनों समूह लगभग 12 हजार साल पहले अलग हुए और उन्होंने अलग-अलग सभ्यताओं की नींव रखी। इसके अलावा, देश भर के करीब 10,000 लोगों के डीएनए नमूनों का मिलान किया गया। हालांकि आज देश में विभिन्न समुदायों के लोग रह रहे हैं, लेकिन उनमें से अधिकांश में सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों का डीएनए पाया गया है। पिछले वर्ष हुई खुदाई के दौरान मिले करीब 20 कंकालों पर वर्तमान में शोध चल रहा है। इनकी अलग-अलग रिपोर्ट तैयार की जा रही है, जिससे कई नए और चौंकाने वाले खुलासे होने की संभावना है। यह सभी डीएनए परीक्षण पूरी तरह से देश की ही प्रयोगशालाओं में किए जा रहे हैं और कोई भी नमूना जांच के लिए विदेशों में नहीं भेजा गया है।

हड़प्पा सभ्यता में ही शुरू हुई थी प्रजातांत्रिक व्यवस्था नमस्ते, योग व तंदूर भी इसी की देन: डॉ. बसंत शिंदे

नारनौंद। डेक्कन विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं प्रख्यात पुरातत्वविद् डॉ. बसंत शिंदे ने कहा कि सरस्वती-सिंधु सभ्यता विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यताओं में से एक है और इसके लगभग आठ हजार वर्ष पुराने होने के साक्ष्य मिले हैं। नगरीय जीवन के शुरुआती विकास, सामाजिक संगठन और सांस्कृतिक परंपराओं के निर्माण में इस सभ्यता का मानव इतिहास में अतुलनीय योगदान रहा है। डॉ. बसंत शिंदे शनिवार को अंतरराष्ट्रीय राखीगढ़ी महोत्सव के दौरान राखीगढ़ी में पत्रकारों से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि सरस्वती-सिंधु सभ्यता के अध्ययन से भारतीय उपमहाद्वीप के प्राचीन इतिहास, सामाजिक संरचना और सांस्कृतिक विकास के बारे में कई महत्वपूर्ण जानकारियां सामने आई हैं। इस समृद्ध विरासत को समझने में राखीगढ़ी जैसे पुरातात्विक स्थलों की भूमिका बेहद खास है। डॉ. शिंदे ने सांस्कृतिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि आज हमारे समाज में प्रचलित 'नमस्ते' करने की परंपरा, 'योग' और 'तंदूर' जैसी जीवनशैली से जुड़ी चीजें इस सभ्यता के अध्ययन में बेहद महत्वपूर्ण हैं। यह परंपराएं दर्शाती हैं कि प्राचीन जीवनशैली और आज के भारत के बीच एक निरंतर सांस्कृतिक प्रवाह रहा है।

विकास व सामूहिक हितों के कार्यों के लिए किया जाता था कुछ लोगों का चयन



डॉ. शिंदे ने बताया कि हड़प्पा सभ्यता में सामुदायिक स्तर पर निर्णय लेने और सामाजिक व्यवस्था को संचालित करने की परंपरा विकसित थी। गांवों में विकास और सामूहिक हितों के कार्यों के लिए कुछ लोगों का चयन किया जाता था, जो मिलकर गांव की दिशा तय करते थे। इस व्यवस्था को प्रजातांत्रिक सोच के शुरुआती स्वरूप के रूप में देखा जा सकता है, जो उस दौर के समाज की एक बड़ी उपलब्धि थी। पुरातत्वविद् ने बताया कि हड़प्पा सभ्यता के लोग शारीरिक बनावट में आज के लोगों जैसे ही दिखाई देते थे। प्राचीन डीएनए अध्ययनों से अतीत की आबादी और वर्तमान भारतीय जनसमूहों के बीच के गहरे संबंधों को समझने में बड़ी मदद मिलती है। उन्होंने आर्यों की उत्पत्ति और भारतीय उपमहाद्वीप की प्राचीन आबादी का उल्लेख करते हुए कहा कि भारतीय इतिहास को सही तरीके से समझने के लिए पुरातात्विक साक्ष्यों और वैज्ञानिक अध्ययनों का महत्व सर्वाधिक है। डॉ. शिंदे ने सांस्कृतिक विरासत का उल्लेख करते हुए कहा कि आज हमारे समाज में प्रचलित 'नमस्ते' करने की परंपरा, 'योग' और 'तंदूर' जैसी जीवनशैली से जुड़ी चीजें इस सभ्यता के अध्ययन में बेहद महत्वपूर्ण हैं। यह परंपराएं दर्शाती हैं कि प्राचीन जीवनशैली और आज के भारत के बीच एक निरंतर सांस्कृतिक प्रवाह रहा है।

उत्तम नगर में गली के लेवल को लेकर बवाल, पुलिस बुलानी पड़ी

70-80 परिवारों ने निर्माण पर जताया एतराज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हांसी

उत्तम नगर में शनिवार को गली के लेवल को लेकर विवाद खड़ा हो गया। करीब 70 से 80 परिवारों ने निर्माण कार्य पर एतराज जताते हुए आरोप लगाया कि गली का लेवल तीन से चार इंच ऊंचा किया जा रहा है। इससे बरसात के दिनों में पानी की निकासी प्रभावित होने और जलभराव की समस्या पैदा होने का खतरा है। विरोध बढ़ने पर नगर परिषद अधिकारियों को मौके पर पुलिस बुलानी पड़ी।

कॉलोनीवासियों की मांग है कि पास में स्थित ड्रेन की तरफ उचित ढलान रखते हुए गली का निर्माण कराया जाए, ताकि बारिश का पानी आसानी से निकल सके। लोगों ने आरोप लगाया कि कॉलोनी में कुछ लोग अधिकारियों तक अपनी पहुंच का हवाला देकर गली का लेवल तय करने की प्रक्रिया को प्रभावित कर रहे हैं। उनका कहना है कि आने वाले दिनों में इसका खामियाजा पूरी कॉलोनी को भुगतना पड़ सकता है।





दो बार विधायक से भी मिल चुके हैं लोग, लेकिन नहीं हुआ समाधान

स्थानीय लोगों के अनुसार, वे इस मामले में दो बार विधायक विनोद भ्याना से मिल चुके हैं। उनका दावा है कि विधायक ने अधिकारियों को जीरो लेवल के अनुसार निर्माण करने के निर्देश दिए थे, लेकिन इसके बावजूद विवाद का समाधान नहीं हो पाया। गली निर्माण विवाद को देखते हुए मौके पर ड्यूटी मजिस्ट्रेट जयवीर सिंह तैनात किए गए। उन्होंने नगर परिषद के एमई के साथ स्थिति का जायजा लिया। अधिकारियों के अनुसार, गली का निर्माण नियमानुसार जीरो लेवल पर किया जा रहा है और लेवल लोगों की मांग के अनुरूप रखा जा रहा है। वहीं, दूसरे पक्ष ने आरोप लगाया कि कुछ लोग गली सहित अन्य विकास कार्यों को आगे नहीं बढ़ने दे रहे हैं। दोनों पक्षों के बीच आरोप-प्रत्यारोप के बीच फिलहाल पुलिस की मौजूदगी में निर्माण कार्य जारी है। अब प्रशासन के सामने निर्माण कार्य पूरा कराने के साथ जल निकासी को लेकर लोगों की आशंकाओं का समाधान करने की चुनौती है।

आधुनिक सुविधाओं से लैस हुआ बरवाला बस स्टैंड, कैबिनेट मंत्री ने किया उद्घाटन

छह बस-बे, एसी वेटिंग रूम व टिकट वेंडिंग मशीन की भी सुविधा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| बरवाला

बरवाला शहर को आधुनिक बस स्टैंड की सौगात मिली है। हरियाणा के लोक निर्माण एवं जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी मंत्री रणबीर गंगवा ने शनिवार को नवनिर्मित बस स्टैंड का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार बरवाला को आधुनिक, सुंदर और सुविधाजनक शहर बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। शहर में बस स्टैंड के साथ मॉडर्न अनाज मंडी, सिटी पार्क, रामबाग, स्टेडियम और अन्य जनसुविधाओं से जुड़ी परियोजनाओं पर भी काम किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि नए बस स्टैंड में यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए आधुनिक व्यवस्थाएं विकसित की गई हैं। यहां छह नए बस-बे, दुकान, टिकट वेंडिंग मशीन, वातानुकूलित प्रतीक्षालय और शिशुओं को दूध पिलाने के लिए अलग कक्ष बनाया गया है।

सिटी पार्क के विकास पर खर्च होंगे 3.30 करोड़



बस स्टैंड पर महिला, पुरुष और दिव्यांगजनों के अनुकूल शौचालयों की व्यवस्था की गई है। बस स्टैंड के प्रथम तल पर पांच कार्यालय कक्ष, चालकों के लिए दो डॉर्मिटरी, एक अतिरिक्त कक्ष और शौचालय भी बनाए गए हैं। उन्होंने कहा कि आधुनिक बस स्टैंड शुरू होने से यात्रियों को बेहतर सुविधाएं मिलेंगी। रणबीर गंगवा ने बताया कि बरवाला में मॉडर्न अनाज मंडी का निर्माण कार्य जारी है। रामबाग के विकास के लिए करीब 3 .30 करोड़ रुपये का टेंडर किया गया है, जबकि सिटी पार्क के विकास पर भी लगभग 3 .30 करोड़ रुपये खर्च किए जाएंगे। शहर में सड़कों, गलियों, लाइब्रेरी और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं से संबंधित कार्य भी करवाए जा रहे हैं। उन्होंने बताया कि शहर के स्टेडियम का निर्माण कार्य प्रगति पर है और कम्युनिटी सेंटर का काम लगभग पूरा होने वाला है। बरवाला की चारों दिशाओं में प्रवेश द्वार बनाए जा रहे हैं। कार्यक्रम में पूर्व चेयरमैन सतबीर वर्मा, एसडीएम अश्वीर नैन, रोडवेज महाप्रबंधक राहुल मित्तल, यातायात प्रबंधक प्रीतम कुमार, मंडल अध्यक्ष मोनू संदूजा, नगर परिषद चेयरमैन रमेश बैटरीवाला, मंडी चेयरमैन प्रवीण सैनी, जिला उपाध्यक्ष मनीष गोयल, वाइस चेयरमैन रोशन घणघस, जिला पार्षद ओपी मालिया आदि मौजूद रहे।

डॉग स्क्वॉड के साथ हांसी पुलिस की दबिश



हांसी। नशा तस्करी पर अंकुश लगाने के लिए पुलिस ने शनिवार को डॉग स्क्वॉड टीम के साथ कई स्थानों पर सर्च अभियान चलाया। पुलिस टीमों ने गणेश कॉलोनी, ऑटो मार्केट और गांव कवारी में जांच करते हुए संदिग्ध वाहनों की चेकिंग की और लोगों को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक किया। पुलिस द्वारा चलाए गए इस अभियान के तहत थाना शहर हांसी, पुलिस चौकी सिसाय पुल, पुलिस चौकी किला बाजार और एवीटी स्टाफ की टीमों ने थाना शहर प्रभारी निरीक्षक सुखजीत सिंह के नेतृत्व में डॉग स्क्वॉड के साथ गणेश कॉलोनी में संयुक्त कार्रवाई की। वहीं, पुलिस चौकी बस स्टैंड की टीम ने ऑटो मार्केट और थाना सदर हांसी की टीम ने गांव कवारी में सर्च अभियान चलाया। इस दौरान पुलिस ने संदिग्ध गतिविधियों पर नजर रखने के साथ लोगों को नशे के स्वास्थ्य, परिवार और समाज पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों की जानकारी दी।

व्यवस्था बेहतर बनाने की तैयारी

सपरा अस्पताल से गंगवा बाइपास तक सड़क की होगी विशेष मरम्मत, 35.70 करोड़ का टेंडर जारी

- बरसाती पानी की निकासी के 25 करोड़ रुपये के काम लगभग पूरे

हरिभूमि न्यूज ▶▶| हिसार

हिसार शहर में सड़क व्यवस्था को बेहतर बनाने और बरसाती पानी की निकासी की समस्या दूर करने के लिए विकास कार्य तेजी से किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में सपरा अस्पताल से गंगवा बाइपास तक सड़क के विशेष मरम्मत कार्य के लिए 35.70 करोड़ रुपये का टेंडर जारी किया गया है। यह कार्य पूरा होने से लोगों को आवागमन में राहत मिलेगी।

टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद शुरू होगा काम

यह जानकारी देते हुए विधायक रणधीर पनिहार ने बताया कि लोक निर्माण विभाग (भवन एवं सड़कें) की ओर से जारी टेंडर के अनुसार हिसार शहर के पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग-65 के आंतरिक हिस्से में सपरा अस्पताल से राजगढ़ रोड बाइपास तक सड़क की विशेष मरम्मत की जाएगी। यह मार्ग हिसार और नलवा विधानसभा क्षेत्र से संबंधित है। टेंडर प्रक्रिया पूरी होने के बाद सड़क मरम्मत का कार्य शुरू होगा। उन्होंने बताया कि शहर में बरसाती पानी की निकासी के लिए करीब 25 करोड़ रुपये की लागत से किए जा रहे कार्य लगभग पूरे हो चुके हैं। इन कार्यों से बारिश के दौरान जलभराव की समस्या को कम करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा शहर में करोड़ों रुपये की लागत से विभिन्न विकास कार्य भी प्रगति पर हैं।





फिजिकल गोल्ड, ईटीएफ और म्यूचुअल फंड के फायदे और सीमाएं

सोने में निवेश का सही रास्ता चुनें चमक ही नहीं लागत को भी देखें

खरीद-बिक्री का खर्च, सुरक्षा, निवेश की सुविधा और लागत तय करेंगे वास्तविक मुनाफा

बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोले, केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं, क्षमता को जानें

बिजनेस डेस्क

सोना भारतीय परिवारों के लिए केवल आभूषण या परंपरा का प्रतीक नहीं, बल्कि मुश्किल वक्त का भरोसेमंद सहारा भी रहा है। महंगाई, आर्थिक अनिश्चितता और शेयर बाजार में उतार-चढ़ाव के बीच निवेशक अपने पोर्टफोलियो में सोने को जगह देना पसंद करते हैं। हालांकि, अब सोने में निवेश का मतलब केवल गहने या सिक्के खरीदकर तिजोरी में रखना नहीं रह गया है। बदलते निवेश विकल्पों ने सोने में पैसा लगाने के कई रास्ते खोल दिए हैं। कोई फिजिकल गोल्ड खरीदता है, तो कोई गोल्ड एक्सचेंज ट्रेडेड फंड (ईटीएफ) या गोल्ड म्यूचुअल फंड के जरिए निवेश करता है। तीनों विकल्पों का उद्देश्य सोने की कीमत में होने वाली बढ़ोतरी से लाभ उठाना हो सकता है, लेकिन इनकी लागत, खरीदने-बेचने की प्रक्रिया, सुरक्षा और निवेश की सुविधा अलग-अलग है। इसलिए केवल सोने के भाव बढ़ने की संभावना देखकर निवेश करना पर्याप्त नहीं है। यह समझना भी जरूरी है कि कौन-सा विकल्प आपकी जरूरत, निवेश अवधि और जोखिम उठाने की क्षमता के अनुकूल है।



फिजिकल गोल्ड

फिजिकल गोल्ड में निवेश का सबसे पारंपरिक तरीका सोने के सिक्के, छड़ या आभूषण खरीदना है। इसका सबसे बड़ा फायदा यह है कि निवेशक के पास सोना वास्तविक रूप में मौजूद रहता है। जरूरत पड़ने पर इसका इस्तेमाल उपहार देने, पारिवारिक आयोजनों या अन्य व्यक्तिगत जरूरतों के लिए भी किया जा सकता है। हालांकि, निवेश के नजरिये से आभूषण और सोने के सिक्के एक जैसे नहीं हैं। गहने खरीदते समय मेकिंग चार्ज और लागू वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी) का खर्च जुड़ता है। दोबारा बेचने पर मेकिंग चार्ज सामान्यतः वापस नहीं मिलता। शुद्धता की जांच, दुकानदार की खरीद नीति और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर के कारण भी वास्तविक मुनाफा घट सकता है। सिक्कों और छड़ों में आमतौर पर आभूषणों की तुलना में मेकिंग चार्ज कम होता है, फिर भी खरीद मूल्य और बिक्री मूल्य का अंतर ध्यान में रखना चाहिए। इसके अलावा, घर में सोना रखने पर चोरी या गुम होने का जोखिम रहता है। बैंक लॉकर में रखने पर अतिरिक्त खर्च हो सकता है। इसलिए जो लोग केवल निवेश के लिए सोना खरीदना चाहते हैं, उन्हें आभूषणों के बजाय कम अतिरिक्त लागत वाले विकल्पों पर विचार करना चाहिए।

गोल्ड ईटीएफ

गोल्ड ईटीएफ ऐसे निवेश फंड हैं, जिनकी इकाइयां शेयर बाजार में खरीदी और बेची जाती हैं। ये आमतौर पर भौतिक सोने में निवेश करते हैं और सोने की कीमत में होने वाले बदलाव के अनुरूप रिटर्न देने का लक्ष्य रखते हैं। इस तरह निवेशक को घर में सोना रखने, उसकी सुरक्षा करने या शुद्धता की जांच कराने की चिंता नहीं करनी पड़ती। गोल्ड ईटीएफ में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट और ट्रेडिंग खाते की जरूरत होती है। निवेशक बाजार खुलने के दौरान प्रचलित भाव पर यूनिट खरीद या बेच सकता है। हालांकि, वास्तविक लेनदेन मूल्य बाजार में मांग-आपूर्ति, खरीद-बिक्री के अंतर और फंड की शुद्ध परिसंपत्ति कीमत से प्रभावित हो सकता है। इस विकल्प में फंड का प्रबंधन खर्च, ब्रोकरेज और अन्य लागू शुल्क रिटर्न को प्रभावित कर सकते हैं। निवेश से पहले एक्सपेंस रेशियो, कारोबार की मात्रा और खरीद-बिक्री के भाव में अंतर की तुलना करनी चाहिए। केवल किसी ईटीएफ की एक यूनिट का भाव कम होने से यह निष्कर्ष नहीं निकालना चाहिए कि वह दूसरे फंड से सस्ता है। अलग-अलग फंड की एक यूनिट के पीछे सोने की मात्रा अलग हो सकती है।

गोल्ड म्यूचुअल फंड

जिन निवेशकों के पास डीमैट खाता नहीं है या जो हर महीने नियमित रकम निवेश करना चाहते हैं, उनके लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक विकल्प हो सकते हैं। ऐसे फंड आमतौर पर गोल्ड ईटीएफ की इकाइयों में निवेश करते हैं। निवेशक इनमें एकमुश्त रकम लगा सकता है या अपनी क्षमता के अनुसार व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी) के जरिए नियमित निवेश कर सकता है। इन फंडों में निवेश के लिए सामान्यतः डीमैट खाते की आवश्यकता नहीं होती। निवेशक संबंधित म्यूचुअल फंड की प्रक्रिया के अनुसार सीधे निवेश कर सकता है।

तीनों विकल्पों में कैसे करें तुलना?

- **कुल लागत:** फिजिकल गोल्ड में मेकिंग चार्ज, जीएसटी और खरीद-बिक्री का अंतर देखें। ईटीएफ व म्यूचुअल फंड में कुल खर्च की तुलना करें।
- **निवेश की सुविधा:** नियमित मासिक निवेश के लिए गोल्ड म्यूचुअल फंड सुविधाजनक हो सकता है, जबकि बाजार में खुद यूनिट खरीदने-बेचने के लिए ईटीएफ उपयोगी है।
- **सुरक्षा:** फिजिकल गोल्ड की सुरक्षा निवेशक की जिम्मेदारी है। डिजिटल निवेश विकल्पों में भौतिक भंडारण की चिंता नहीं होती, लेकिन बाजार और फंड से जुड़े जोखिम बने रहते हैं।
- **निकासी:** निवेश से पैसा निकालने की प्रक्रिया और उसमें लगने वाले समय को समझें। ईटीएफ की बिक्री बाजार के कारोबार पर निर्भर करती है, जबकि म्यूचुअल फंड में लागू निकासी नियम महत्वपूर्ण हैं।
- **कराधान:** कर नियम निवेश के प्रकार, खरीद की तारीख और लागू कानूनों के अनुसार अलग हो सकते हैं। इसलिए पुराने नियमों के आधार पर अनुमान लगाने के बजाय निवेश के समय मौजूदा कर प्रावधानों की पुष्टि करें।

पोर्टफोलियो में संतुलन जरूरी

सोने में निवेश का उद्देश्य केवल अधिकतम मुनाफा कमाना नहीं, बल्कि निवेश पोर्टफोलियो में विविधता लाना भी हो सकता है। हालांकि, सोने की कीमतें भी घटती-बढ़ती हैं और कोई भी विकल्प निश्चित रिटर्न की गारंटी नहीं देता। गोल्ड ईटीएफ और गोल्ड म्यूचुअल फंड में निवेश करने से सोने की कीमतों से जुड़ा जोखिम समाप्त नहीं होता। निवेशकों को अपनी पूरी बचत सोने में लगाने के बजाय उसे अन्य निवेश साधनों के साथ संतुलित रखने पर विचार करना चाहिए। आपातकालीन जरूरतों के लिए पर्याप्त नकदी और अपने वित्तीय लक्ष्यों के अनुरूप निवेश योजना भी जरूरी है।

14 साल में 5 करोड़ जोड़ना लक्ष्य तो निवेश की रणनीति में करें बदलाव

बिजनेस डेस्क

नौकरी शुरू करने के बाद हर व्यक्ति चाहता है कि एक समय ऐसा आए, जब उसे रोजी-रोटी के लिए काम करने की मजबूरी न रहे। आर्थिक स्वतंत्रता का यही सपना युवाओं को जल्दी निवेश शुरू करने के लिए प्रेरित करता है, लेकिन यदि कोई 28 वर्ष की उम्र में 70 हजार रुपये मासिक वेतन पाता हो और 42 वर्ष की उम्र में नौकरी छोड़कर रिटायर होना चाहता हो, तो उसके सामने चुनौती बड़ी है।

खासकर तब, जब उसका लक्ष्य 5 करोड़ रुपये फंड तैयार करना हो। इसी सवाल को समझने के लिए एक वित्तीय प्रयोग में कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित चैटजीपीटी से निवेश योजना तैयार कराई गई। इसमें 25 हजार की मासिक व्यवस्थित निवेश योजना (एसआईपी), हर साल निवेश में 10% बढ़ोतरी और निवेश पर सालाना 15% प्रभावी प्रतिफल की धारणा रखी गई। अनुमान के मुताबिक, 14 साल तक नियमित निवेश करने के बाद भी 42 वर्ष की उम्र में करीब 2.10 करोड़ ही जुट पाएंगे। यानी 5 करोड़ के लक्ष्य से लगभग 2.90 करोड़ रुपये कम रह जाएंगे।



25 हजार की एसआईपी और हर साल 10% निवेश बढ़ाने पर 42 साल की उम्र तक जुटेंगे 2.10 करोड़

70000 की आय में कितनी गुंजाइश

निवेश योजना बनाने से पहले आय और खर्च का हिसाब समझना जरूरी है। इस उदाहरण में निवेशक नोएडा में रहता है और उसकी मासिक आय 70 हजार रुपये है। इसमें से 14 हजार मकान के किराये पर खर्च होते हैं। राशन और घरेलू जरूरतों पर 5 हजार, बिजली-पानी पर 2 हजार, इंटरनेट और मोबाइल पर 1,500 तथा परिवहन पर 2 हजार खर्च होते हैं। बाहर खाने और अन्य मनोरंजन पर 5 हजार, व्यक्तिगत खरीदारी पर 3 हजार, बीमा और चिकित्सा पर 2,500 तथा परिवार की मदद और दूसरे विविध खर्चों पर 10 हजार खर्च होते हैं। इस तरह कुल मासिक खर्च 45 हजार बैठता है और निवेश के लिए 25 हजार बचते हैं। यानी निवेशक अपनी आय का लगभग 35.7% निवेश कर सकता है। पूरी बची रकम एसआईपी में लगाने से पहले आपातकालीन जरूरतों, अनियमित खर्चों व पर्याप्त बीमा की व्यवस्था करना जरूरी है।

हर वर्ष बढ़ेगी एसआईपी फिर लक्ष्य अधूरा

योजना में माना गया कि निवेशक की सैलरी हर साल 10% बढ़ेगी और वह अपनी एसआईपी में भी उतनी ही बढ़ोतरी करेगा। शुरुआत में 25 हजार की मासिक एसआईपी से सालाना 3 लाख निवेश होंगे। दूसरे वर्ष मासिक निवेश बढ़कर 27,500 और तीसरे वर्ष 30,250 हो जाएगा। पांचवें वर्ष तक मासिक एसआईपी करीब 36,603 पहुंचने का अनुमान है। दसवें वर्ष में यह लगभग 58,949 और चौदहवें वर्ष में करीब 86,307 हो जाएगी। इस गणना के अनुसार, 14 वर्षों में निवेशक अपनी जेब से कुल लगभग 83.92 लाख लगाएगा। यदि निवेश पर 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता है, तो कुल निवेश का मूल्य करीब 2.10 करोड़ हो सकता है। इसमें लगभग 1.26 करोड़ संभावित निवेश वृद्धि से आएंगे।

5 करोड़ जुटाने में लगेंगे 19 साल

यदि निवेशक इसी योजना पर चलता रहे, एसआईपी हर साल 10% बढ़ाता रहे और 15% प्रभावी सालाना प्रतिफल मिलता रहे, तो 5 करोड़ का लक्ष्य लगभग 18 साल 10 महीने में हासिल होने का अनुमान है। यानी 28 वर्ष की उम्र में निवेश शुरू करने वाला व्यक्ति करीब 47 वर्ष की उम्र में इस लक्ष्य तक पहुंच सकता है। यह उसकी निर्धारित रिटायरमेंट उम्र से लगभग पांच साल बाद है। इससे स्पष्ट है कि केवल नियमित एसआईपी और वेतन के साथ बढ़ते निवेश पर निर्भर रहकर 42 वर्ष में 5 करोड़ जुटाना इस योजना के तहत संभव नहीं दिखता। लक्ष्य हासिल करने के लिए निवेश की रकम बढ़ानी होगी, मौजूदा बचत का सहारा लेना होगा, अतिरिक्त आय के स्रोत तलाशने होंगे या रिटायरमेंट की समयसीमा में बदलाव करना होगा।

लक्ष्य पाने के लिए क्या बदलना होगा

सबसे पहले, वेतन बढ़ने के साथ निवेश की रकम भी बढ़ाने पर ध्यान देना चाहिए। यदि हर साल वेतन में 10% की वृद्धि होती है, तो खर्च भी उसी अनुपात में बढ़ाना जरूरी नहीं है। वेतन वृद्धि का एक अतिरिक्त हिस्सा निवेश में लगाने से लंबी अवधि में बड़ा अंतर आ सकता है। बोनस या दूसरी अतिरिक्त आय का कुछ हिस्सा भी वित्तीय लक्ष्यों के लिए रखा जा सकता है। दूसरा, निवेश में विविधता बनाए रखना जरूरी है। लंबी अवधि में इक्विटी म्यूचुअल फंड पूंजी बढ़ाने की संभावना दे सकते हैं, लेकिन इनमें बाजार का जोखिम भी रहता है। ऋण आधारित निवेश और दूसरे साधनों का चयन निवेशक की जोखिम क्षमता, निवेश अवधि और जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए। केवल जल्दी लक्ष्य हासिल करने के लिए अत्यधिक जोखिम लेना समझदारी नहीं है। तीसरा, महंगाई को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

आज के 5 करोड़ और 14 साल बाद के 5 करोड़ की क्रय शक्ति समान नहीं होगी। इसलिए रिटायरमेंट के समय के खर्च, स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों और भविष्य की महंगाई को ध्यान में रखकर लक्ष्य तय करना चाहिए। कर, निवेश शुल्क और रिटायरमेंट के बाद नियमित निकासी का असर भी गणना में शामिल होना चाहिए।

रिटायरमेंट का लक्ष्य बड़ी रकम नहीं

जल्दी रिटायर होने का अर्थ केवल निवेश खाते में बड़ी रकम जमा करना नहीं है। यह भी तय करना होगा कि रिटायरमेंट के बाद हर महीने कितना खर्च होगा, जमा पूंजी कितने वर्षों तक चलनी चाहिए और आपातकालीन जरूरतों के लिए कितनी रकम अलग रखनी होगी। यदि रिटायरमेंट के बाद कोई नियमित आय नहीं होगी, तो निवेश से निकासी की योजना और भी महत्वपूर्ण हो जाती है।



स्मॉलकैप फंड में 25% तक रिटर्न, लेकिन निवेश से पहले जोखिम समझना भी जरूरी

बचत मंत्र

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में तेजी के दौरान स्मॉलकैप म्यूचुअल फंड निवेशकों को आकर्षित करते हैं। छोटी कंपनियों में कारोबार बढ़ाने और तेजी से आगे निकलने की क्षमता होती है, इसलिए इनमें निवेश करने वाले फंड लंबी अवधि में बेहतर रिटर्न देने की संभावना रखते हैं। लेकिन यही निवेश बाजार में गिरावट आने पर बड़ा नुकसान भी करा सकता है। वर्ष 2025 की जनवरी-मार्च तिमाही में प्रमुख स्मॉलकैप फंडों को करीब 13 से 14 प्रतिशत तक नुकसान हुआ। वर्ष 2026 की पहली तिमाही में भी इस श्रेणी के फंडों में लगभग 12 से 13 प्रतिशत की गिरावट आई। इसके बाद अप्रैल-जून 2026 में स्मॉलकैप फंडों में करीब 23 प्रतिशत की तेजी देखने को मिली। यह उतार-चढ़ाव बताता है कि इस श्रेणी में रिटर्न की संभावना के साथ जोखिम भी काफी अधिक है। इक्विटीमास्टर की 20 अक्टूबर 2026 को प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार, पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न के आधार पर क्वांट स्मॉलकैप, बंधन स्मॉलकैप, इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप, निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप और बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप प्रमुख फंडों में शामिल हैं। इनका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न करीब 22.5 से 25 प्रतिशत के बीच रहा है।

क्वांट स्मॉलकैप फंड

पांच साल के औसत रोलिंग रिटर्न में क्वांट स्मॉलकैप फंड करीब 25.04 प्रतिशत के साथ पहले स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 17.84 प्रतिशत है। फंड के प्रमुख निवेश में एचएफसीएल, आरबीएल बैंक, अडाणी एंटरप्राइजेज, अडाणी पावर और एजिस लॉजिस्टिक्स शामिल हैं। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 18.2 प्रतिशत रही।

बंधन स्मॉलकैप फंड

बंधन स्मॉलकैप फंड लगभग 24.4 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ दूसरे स्थान पर है। रिपोर्ट में इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 19 प्रतिशत बताया गया है। इसकी खासियत बेहतर जोखिम-समायोजित प्रदर्शन है। रिपोर्ट के अनुसार, प्रमुख फंडों में इसका शार्प और सॉर्टिनो अनुपात बेहतर रहा है। ये अनुपात बताते हैं कि किसी फंड ने कितना जोखिम उठाकर कितना रिटर्न दिया। इस फंड का आकार तेजी से बढ़ा है। मार्च 2022 में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 1,410 करोड़ रुपये थी, जो अगस्त 2026 में बढ़कर लगभग 34,180 करोड़ रुपये हो गई।

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड

इनवेस्को इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 24.05 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ तीसरे स्थान पर है। रिपोर्ट के मुताबिक, इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न 18.49 प्रतिशत रहा, जबकि निफ्टी स्मॉलकैप 250 का रिटर्न 12.42 प्रतिशत था। तीन साल की अवधि में भी इस फंड का प्रदर्शन अपने बेंचमार्क से बेहतर रहा। फंड का निवेश विभिन्न कंपनियों में फैला है। इसकी प्रमुख हिस्सेदारियों में साई लाइफ साइंसेज, इटर्नल, एम्बर एंटरप्राइजेज, आदित्य इन्फोटेक और कृष्णा इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज शामिल हैं।

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड

निप्पॉन इंडिया स्मॉलकैप फंड इस श्रेणी के बड़े फंडों में शामिल है। रिपोर्ट में इसकी प्रबंधनाधीन संपत्ति करीब 81,000 करोड़ है। इसका औसत पांच साल का रोलिंग रिटर्न लगभग 24 प्रतिशत और वर्तमान पांच साल का रिटर्न करीब 17.1 प्रतिशत रहा। फंड के पोर्टफोलियो में बड़ी संख्या में शेयर शामिल हैं और किसी एक कंपनी में निवेश का हिस्सा अपेक्षाकृत सीमित रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, इसकी तीन साल की अस्थिरता शीर्ष पांच फंडों में सबसे कम, करीब 17.5 प्रतिशत रही।

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड

बैंक ऑफ इंडिया स्मॉलकैप फंड करीब 22.55 प्रतिशत के औसत पांच साल के रोलिंग रिटर्न के साथ पांचवें स्थान पर है। इसका वर्तमान पांच साल का रिटर्न लगभग 18.75 प्रतिशत रहा। इसके प्रत्यक्ष निवेश विकल्प का वार्षिक व्यय अनुपात 0.42 प्रतिशत बताया गया है। रिपोर्ट में इसकी तीन साल की वार्षिकीकृत अस्थिरता 20 प्रतिशत बताई गई है, शीर्ष पांच फंडों में सबसे अधिक है।

इन बातों का रखें ध्यान

स्मॉलकैप फंड में निवेश करने से पहले केवल एक, तीन या पांच साल का रिटर्न देखकर फैसला करना पर्याप्त नहीं है। यह भी देखना चाहिए कि बाजार में गिरावट के दौरान फंड ने कैसा प्रदर्शन किया, उसका पोर्टफोलियो कितना विविध है।

रिटायरमेंट पर एनपीएस का पूरा पैसा निकालना जरूरी नहीं

60 साल की उम्र के बाद निकासी टालने और चरणबद्ध तरीके से पैसा लेने के विकल्प

अलर्ट

बिजनेस डेस्क

नौकरी के दौरान नियमित बचत करके रिटायरमेंट के लिए बड़ा फंड तैयार करना जितना जरूरी है, उतना ही अहम यह तय करना भी है कि रिटायरमेंट के बाद उस पैसे का इस्तेमाल कैसे किया जाए।

सामान्य निकासी में फड की राशि और ग्राहक की श्रेणी के अनुसार तय होंगे नियम

नेशनल पेंशन सिस्टम (एनपीएस) में निवेश करने वाले कई लोगों को लगता है कि 60 साल की उम्र पूरी होते ही उन्हें पूरा पैसा निकालना होगा या फिर तुरंत पेंशन शुरू करनी पड़ेगी। लेकिन ऐसा हर स्थिति में जरूरी नहीं है। पेंशन फंड नियामक एवं विकास प्राधिकरण (पीएफआरडीए) के नियमों में निवेशकों को निकासी और पेंशन की योजना बनाने के लिए कई विकल्प दिए गए हैं। इनमें एकमुश्त रकम निकालने, निकासी को आगे टालने और निर्धारित अवधि में किस्तों के जरिए पैसा लेने जैसे विकल्प शामिल हैं। हालांकि, कौन-सा विकल्प उपलब्ध होगा और कितनी रकम निकाली जा सकेगी, यह एनपीएस खाते की श्रेणी, कुल जमा फंड और लागू नियमों पर निर्भर करता है। इसलिए रिटायरमेंट के करीब पहुंच रहे निवेशकों को पहले अपने खाते पर लागू प्रावधान समझने चाहिए।



60 साल बाद कितना पैसा निकाल सकते हैं?

एनपीएस से सामान्य निकासी के नियम सभी निवेशकों के लिए एक जैसे नहीं हैं। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू नियमों के अनुसार, यदि जमा पेंशन फंड 8 लाख तक है, तो पूरी रकम एकमुश्त निकालने का विकल्प उपलब्ध हो सकता है। इससे अधिक राशि होने पर निकासी की सीमा और शेष रकम के इस्तेमाल के नियम लागू होते हैं। कुछ परिस्थितियों में 8 लाख से अधिक और 12 लाख तक के फंड के लिए भी अलग विकल्प दिए गए हैं। बड़े फंड के मामले में लागू नियमों के अनुसार एक हिस्सा एकमुश्त निकाला जा सकता है, जबकि शेष रकम का इस्तेमाल एन्युटी खरीदने या निर्धारित अवधि में चरणबद्ध निकासी के लिए किया जा सकता है। सरकारी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए अलग प्रावधान लागू हो सकते हैं। इसलिए यह मान लेना ठीक नहीं है कि हर एनपीएस खाताधारक को अनिवार्य रूप से केवल 60% रकम ही निकालने की अनुमति है।एनपीएस के पुराने नियमों में सामान्य निकासी के समय अधिकतम 60% रकम एकमुश्त निकालने और कम से कम 40% रकम से एन्युटी खरीदने का प्रावधान प्रमुख था। बाद के संशोधनों में कुछ श्रेणियों के लिए विकल्पों का विस्तार किया गया है। ऐसे में निकासी का निर्णय लेने से पहले नवीनतम नियम और अपने खाते की श्रेणी की पुष्टि करना जरूरी है।

निकासी टालने का विकल्प

यदि किसी निवेशक को 60 साल की उम्र में तुरंत पूरे फंड की जरूरत नहीं है, तो वह नियमों के अनुसार निकासी या एन्युटी खरीदने की प्रक्रिया को आगे टालने पर विचार कर सकता है। गैर-सरकारी क्षेत्र के सामान्य एनपीएस खातों में लागू प्रावधानों के तहत पात्र निवेशक 75 साल की उम्र तक खाते में बने रहने या निकासी को स्थगित करने के विकल्प का इस्तेमाल कर सकते हैं। इस दौरान खाते में निवेशित रकम बाजार के प्रदर्शन के अनुसार बढ़ या घट सकती है। इसका अर्थ यह नहीं है कि फंड पर निश्चित ब्याज मिलता रहेगा। इक्विटी और बॉन्ड में निवेश की मात्रा के अनुसार जोखिम और संभावित रिटर्न बदल सकते हैं।

किस्तों में पैसा लेने की सुविधा

एनपीएस में चरणबद्ध निकासी के विकल्प भी उपलब्ध हैं। इसके तहत पात्र निवेशक पूरी निकासी एक साथ करने के बजाय निर्धारित अंतराल पर रकम ले सकते हैं। कुछ विकल्पों में एकमुश्त निकासी वाली रकम को किस्तों में लेने की सुविधा मिलती है, जबकि व्यवस्थित यूनिट निकासी के तहत निवेश की यूनिटें निर्धारित समय के अनुसार भुनाई जाती हैं। यह व्यवस्था म्यूचुअल फंड की व्यवस्थित निकासी योजना जैसी लग सकती है, लेकिन दोनों को एक जैसा नहीं समझना चाहिए।

एन्युटी से कैसे मिलेगी पेंशन?

एन्युटी एक ऐसा वित्तीय उत्पाद है, जिसे बीमा कंपनी से खरीदने पर चुनी गई योजना की शर्तों के अनुसार नियमित पेंशन मिलती है। एनपीएस में लागू नियमों के तहत कुछ स्थितियों में फंड का एक हिस्सा एन्युटी खरीदने के लिए इस्तेमाल करना पड़ता है। इससे रिटायरमेंट के बाद नियमित आय का स्रोत बन सकता है। एन्युटी खरीदने से पहले उसकी पेंशन दर, भुगतान की शर्तें, जीवनसाथी को मिलने वाले लाभ और मृत्यु के बाद खरीद मूल्य की वापसी जैसे विकल्पों को समझना चाहिए। अलग-अलग योजनाओं में मिलने वाली पेंशन और शर्तें अलग हो सकती हैं। एन्युटी का चुनाव केवल अनुमानित मासिक पेंशन देखकर नहीं करना चाहिए।

इन बातों पर दें ध्यान

सबसे पहले अपने एनपीएस खाते की श्रेणी और जमा फंड की मौजूदा राशि की जांच करें। इसके बाद यह तय करें कि रिटायरमेंट के बाद मासिक खर्च चलाने के लिए कितनी रकम चाहिए और अन्य स्रोतों से कितनी आय मिलेगी। यदि तुरंत बड़ी रकम की जरूरत है, तो एकमुश्त निकासी का विकल्प उपयोगी हो सकता है। वहीं नियमित आय की जरूरत होने पर एन्युटी या चरणबद्ध निकासी पर विचार किया जा सकता है। खाते में नामांकित व्यक्ति, बैंक खाते और अन्य जरूरी विवरण भी अपडेट रखें। निकासी से जुड़े कर नियमों की पुष्टि करना न भूलें। यह मानकर न चलें कि एनपीएस से निकाली गई हर रकम और उससे बाद में होने वाली कमाई हमेशा कर-मुक्त होगी।

आरएचपी में कारोबार, वित्तीय स्थिति, प्रमोटर्स के रिकॉर्ड को देखें

आईपीओ में पैसा लगाने से पहले परखें कंपनी की असली ताकत

- गई रकम के इस्तेमाल और शेयर के मूल्यांकन की भी जांच जरूरी
- केवल लिस्टिंग गेन की उम्मीद में निवेश करना पड़ सकता है भारी

बिजनेस डेस्क

शेयर बाजार में जब भी किसी कंपनी का आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) आता है, निवेशकों के बीच उसे लेकर उत्सुकता बढ़ जाती है। ग्रे मार्केट प्रीमियम, संभावित लिस्टिंग गेन और दूसरे निवेशकों की दिलचस्पी के आधार पर कई लोग आवेदन करने का फैसला कर लेते हैं, लेकिन किसी आईपीओ में भारी मांग होना इस बात की गारंटी नहीं है कि कंपनी भी उतनी ही मजबूत है या उसके शेयर से अच्छा मुनाफा मिलेगा। कई बार आकर्षक प्रचार के पीछे कमजोर वित्तीय स्थिति, बढ़ता कर्ज या जरूरत से ज्यादा मूल्यांकन छिपा हो सकता है। ऐसे में निवेशकों के लिए जरूरी है कि वे कंपनी की असली स्थिति समझने के बाद ही पैसा लगाने का फैसला करें। इसके लिए रेड हेरिंग प्रॉस्पेक्टस (आरएचपी) एक महत्वपूर्ण दस्तावेज है। इसमें कंपनी के कारोबार, वित्तीय प्रदर्शन, जोखिम, प्रबंधन, प्रमोटर्स और आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम के इस्तेमाल की जानकारी दी जाती है। दस्तावेज बड़ा जरूर होता है, लेकिन कुछ अहम पहलुओं पर ध्यान देकर निवेशक बेहतर निर्णय ले सकते हैं।

1. कंपनी का कारोबार और कमाई का आधार समझें

आईपीओ में निवेश करने से पहले सबसे पहले यह समझें कि कंपनी क्या कारोबार करती है, उसके ग्राहक कौन हैं और उसकी कमाई किन उत्पादों या सेवाओं से होती है। यह भी देखें कि कंपनी जिस क्षेत्र में काम करती है, वहां भविष्य में कारोबार बढ़ने की कितनी संभावनाएं हैं और प्रतिस्पर्धा कितनी कड़ी है। केवल कंपनी के विस्तार संबंधी दावों पर भरोसा करना पर्याप्त नहीं है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों की बिक्री, मुनाफे और नकदी प्रवाह के आंकड़ों की तुलना करें। अगर बिक्री लगातार बढ़ रही है, लेकिन मुनाफा स्थिर है या घट रहा है, तो इसकी वजह जानना जरूरी है। इसी तरह, कंपनी के खाते में मुनाफा दिखने के बावजूद अगर उसके नियमित कारोबार से पर्याप्त नकदी नहीं आ रही है, तो यह चिंता का संकेत हो सकता है। यह भी देखें कि कंपनी की कमाई कुछ ही बड़े ग्राहकों पर निर्भर तो नहीं है।

2. प्रमोटर्स और प्रबंधन का पिछला रिकॉर्ड जांचें

कंपनी की सफलता में उसके प्रबंधन और प्रमोटर्स की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। इसलिए आरएचपी में उनके अनुभव, पिछली कारोबारी गतिविधियों और कंपनी चलाने के तरीके से जुड़ी जानकारियों पर ध्यान दें। देखें कि प्रमोटर्स ने पहले किन कारोबारों में काम किया है और उनका रिकॉर्ड कैसा रहा है। कंपनी के प्रमुख अधिकारियों के वेतन, प्रमोटर्स की हिस्सेदारी और गिरवी रखे गए शेयरों की जानकारी भी उपयोगी हो सकती है। इसके अलावा, कंपनी या उसके प्रमुख अधिकारियों के खिलाफ चल रहे महत्वपूर्ण कानूनी मामलों, नियामकीय कार्रवाई और वित्तीय अनियमितताओं से जुड़े खुलासों को ध्यान से पढ़ें।

3. प्रमोटर्स से जुड़ी कंपनियों के लेनदेन पर नजर रखें

कई कंपनियां अपने प्रमोटर्स, उनके परिवार के सदस्यों या उनसे जुड़ी दूसरी संस्थाओं के साथ कारोबार करती हैं। इन्हें संबंधित पक्षों के साथ लेनदेन कहा जाता है। ऐसे लेनदेन अपने आप में गलत नहीं हैं, लेकिन इनकी रकम, शर्तों और कारोबारी औचित्य की जांच जरूरी है। आरएचपी में देखें कि कंपनी प्रमोटर्स से जुड़ी संस्थाओं को कितना भुगतान करती है, उनसे कितना सामान या सेवाएं खरीदती है और उन्हें कितना पैसा देती है। यह भी समझें कि लेनदेन सामान्य कारोबारी शर्तों पर हो रहा है या नहीं। पिछले तीन वर्षों के आंकड़ों में अचानक बड़ी बढ़ोतरी, असामान्य भुगतान या संबंधित पक्षों के साथ लगातार बढ़ते लेनदेन दिखाई दें, तो उनकी वजह तलाशें।

4. आईपीओ से जुटाई जाने वाली रकम का इस्तेमाल जानें

आईपीओ में आवेदन करने से पहले यह समझना जरूरी है कि कंपनी निवेशकों से पैसा क्यों जुटा रही है। आम तौर पर आईपीओ में फ्रेश इश्यू और ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शामिल हो सकते हैं। फ्रेश इश्यू में कंपनी नए शेयर जारी करके रकम जुटाती है, जबकि ओएफएस में मौजूदा शेयरधारक अपने शेयर बेचते हैं। ओएफएस से मिलने वाली रकम कंपनी के बजाय शेयर बेचने वाले निवेशकों को मिलती है। आरएचपी में देखें कि फ्रेश इश्यू से मिलने वाले पैसे का इस्तेमाल किस उद्देश्य से किया जाएगा। कंपनी कर्ज चुकाना चाहती है, नई उत्पादन क्षमता स्थापित करना चाहती है, कारोबार का विस्तार करना चाहती है या सामान्य कॉरपोरेट जरूरतों के लिए रकम जुटा रही है? इन उद्देश्यों का कंपनी की भविष्य की वृद्धि पर क्या असर पड़ सकता है, इसे समझें। अगर कंपनी कर्ज चुकाने के लिए पैसा जुटा रही है, तो इससे उसकी वित्तीय स्थिति में सुधार हो सकता है।

5. शेयर का मूल्यांकन और जोखिम जरूर परखें

अच्छी कंपनी का आईपीओ भी खराब निवेश साबित हो सकता है, अगर उसके शेयर बहुत महंगे मूल्य पर पेश किए जा रहे हों। इसलिए कंपनी की वित्तीय स्थिति के साथ उसके मूल्यांकन की तुलना भी जरूरी है। आरएचपी में कंपनी की प्रति शेयर आय, मूल्य-आय अनुपात (पी/ई), शुद्ध परिसंपत्ति मूल्य और दूसरी वित्तीय जानकारियों को देखें। समान कारोबार करने वाली सूचीबद्ध कंपनियों के मूल्यांकन से इसकी तुलना करें। यह समझने की कोशिश करें कि कंपनी जिस कीमत पर शेयर पेश कर रही है, क्या उसका आधार मौजूदा कमाई, भविष्य की वृद्धि और कारोबारी संभावनाओं से मेल खाता है।

खबर संक्षेप

बिजली निजीकरण के खिलाफ संघर्ष रंग लाया

हिसार। हरियाणा में बिजली निजीकरण के फैसले और पैरेलल लाइसेंस के मुद्दे पर सरकार के निर्णय की वापसी को लेकर अनुबंधित विद्युत कर्मचारी संघ हरियाणा एवं बिजली बोर्ड कर्मचारी परिषद, भारतीय मजदूर संघ से जुड़े पदाधिकारियों ने खुशी जाहिर की। शनिवार को रेस्ट हाउस में सुबह दोनों संगठनों की संयुक्त बैठक आयोजित की गई। इसमें पदाधिकारियों ने बिजली कर्मचारियों की हड़ताल को सफल बनाने में दोनों संगठनों के कार्यकर्ताओं के योगदान की सराहना करते हुए उन्हें बधाई दी।

रोडवेज यूनियन ने बिजली कर्मियों को दी बधाई

हिसार। सर्व कर्मचारी संघ से संबंधित हरियाणा रोडवेज वर्करज यूनियन ने बिजली वितरण के समानांतर लाइसेंस के मुद्दे पर बिजली कर्मचारियों की एकजुटता का समर्थन किया है। यूनियन ने कहा कि बिजली कर्मचारियों की दो दिवसीय हड़ताल में अन्य विभागों के कर्मचारियों ने भी खुलकर सहयोग दिया, जिससे सरकार पर दबाव बढ़ा और बिजली यूनियन नेताओं को बातचीत के लिए बुलाया गया।

को-इंचार्ज बनाए जाने पर जताया आभार

हिसार। हरियाणा कांग्रेस एससी विभाग के प्रदेश सचिव एवं प्रदेश प्रवक्ता सुखबीर नागर को पार्टी के एससी विभाग, जिला हिसार का को-इंचार्ज नियुक्त किए जाने पर वरिष्ठ नेता भारत सिंह मलिक ने कांग्रेस के वरिष्ठ नेतृत्व का आभार व्यक्त किया। भारत सिंह मलिक ने राज्यसभा सांसद एवं गुजरात और कर्नाटक के प्रभारी रणदीप सिंह सुरजेवाला, एससी विभाग के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेंद्र पाल गौतम एवं हरियाणा प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष राव नरेंद्र सिंह और एससी विभाग के अध्यक्ष मनोज बागड़ी का सुखबीर नागर को यह महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपने के लिए आभार जताया।

गेहूं चोरी के मामले में दूसरा आरोपी दबोचा

हिसार। सदर पुलिस ने चोरी की वारदात को सुलझाते हुए मामले में संलिप्त दूसरे आरोपी धिकताना निवासी सुमित उर्फ जग्गू को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपी से पूछताछ कर घटनास्थल की निशानदेही करवाई और आवश्यक कानूनी कार्रवाई पूरी की। मामले में पुलिस पहले ही एक आरोपी को गिरफ्तार कर चुकी है।

स्कूल में महर्षि वाल्मीकि जयंती मनाई

उकलाना। आरडीएम सरस्वती पब्लिक स्कूल में महर्षि वाल्मीकि जयंती श्रद्धा एवं सम्मान के साथ मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने महर्षि वाल्मीकि के चित्र के समक्ष पुष्प अर्पित कर उन्हें श्रद्धांजलि दी और उनके आदर्शों को स्मरण किया।

मित्तल ने दिया अग्रोहा मेले में पहुंचने का न्योता

बरवाला। उद्योग व्यापार मंडल के प्रदेश महासचिव सौरभ मित्तल ने अनेक पदाधिकारियों और सदस्यों के साथ पुरानी अनाज मंडी व नई अनाज मंडी समेत आसपास क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरे में प्रदेश महासचिव सौरभ मित्तल ने 25 अक्टूबर को अग्रोहा धाम में होने वाले 43वें विशाल अग्रोहा मेले में अधिक से अधिक तादाद में पहुंचने का न्योता दिया। इस अवसर पर विक्की असीजा, जगत राम मित्तल, प्रवीण बंसल, संजय गर्ग, सुभाष राजली, प्रमोद गोयल, राकेश बंसल व विनोद बंसल आदि मौजूद रहे।

शरद पूर्णिमा पर सुंदरकांड एवं जागरण आज

आदमपुर। शरद पूर्णिमा के उपलक्ष्य में टेल वाला कुटिया हनुमान मंदिर में रामचरितमानस सुंदरकांड प्रचारिणी सभा द्वारा सुंदरकांड पाठ का आयोजन किया जाएगा। इसके अलावा पाठ के बाद गायको द्वारा बाबा हनुमान का गुणगान किया जाएगा। सोमवार को मंदिर में मेला लगेगा। उधर भगवान वाल्मीकि जयंती के उपलक्ष्य में भी 25 अक्टूबर रात्रि जवाहर नगर वाल्मीकि मंदिर में जागरण का आयोजन किया जाएगा।

वैदिक विचारधारा अपनाने का किया आह्वान

गृहस्थ जीवन में प्रेम और आपसी सम्मान सुखी जीवन का आधार

आर्य समाज मॉडल टाउन के वार्षिकोत्सव में गूंजा 'ओम' की महिमा का संदेश

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार



हिसार। आर्य समाज, मॉडल टाउन में प्रवचन देते आचार्य अंकित प्रभाकर।

आर्य समाज, मॉडल टाउन के 74वें वार्षिकोत्सव के चौथे दिन वैदिक मंत्रोच्चार, देव यज्ञ, भजन और प्रवचनों के माध्यम से श्रद्धालुओं को धर्म, संस्कृति और जीवन मूल्यों का संदेश दिया गया। कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं ने महर्षि दयानंद सरस्वती के योगदान को याद करते हुए वैदिक विचारधारा को जीवन में अपनाने का आह्वान किया। प्रातःकाल आयोजित देव यज्ञ में राज वर्मा एडवोकेट, देवकीनंदन, मुकेश सपत्नीक, डॉ. ढांडी और वी.एस. खन्ना ने यजमान के रूप में आहुतियां अर्पित कीं। यज्ञ ब्रह्मा आचार्य सूर्यदेव वेदांशु ने यज्ञ संपन्न करवाया। पंडित अजय आर्य ने अपने भजन 'ऋषि आते जो यहां ना, हम पार कैसे होते, पढ़ने को वेद हमको अधिकार कैसे होते' के माध्यम से महर्षि दयानंद सरस्वती के योगदान को स्मरण किया। प्रवचन सत्र में आचार्य अंकित प्रभाकर ने गृहस्थ जीवन को सुखमय बनाने के लिए पति-पत्नी के बीच प्रेम, सहयोग और आपसी सम्मान को आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि दांपत्य जीवन में दोनों को 'पहले आप' की भावना के साथ एक-दूसरे को प्राथमिकता देनी चाहिए। पति-पत्नी को केवल जीवनसाथी ही नहीं, बल्कि एक-दूसरे का सच्चा मित्र बनकर रहना चाहिए। आपसी समझ, त्याग और सम्मान से ही परिवार में सुख-शांति और सौहार्द का वातावरण कायम रहता है।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में वीरेंद्र आर्य, सुरेंद्र बेरवाल, राजकुमार डुडेजा, मदन वासुदेवा, राज वर्मा, सुभाष आर्य, मांगेराम आर्य, सविता वेदांशु, रेखा गौतम, साधना मेहता, आदर्श गुट और सीमा काठपाल सहित सैकड़ों आर्यजन उपस्थित रहे।



हिसार। स्वास्थ्य एवं अध्यात्म प्रयोगशाला के दूसरे दिन साधकों को संबोधित करते डॉ. गोपाल शास्त्री व कार्यक्रम में उपस्थित साधक।

'कम खाओ-गम भगाओ, व्यस्त रहो-मस्त रहो' के मंत्र से समझाया संयमित दिनचर्या का महत्व

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

अग्रसेन भवन ट्रस्ट के सहयोग से अग्रसेन भवन में आयोजित स्वास्थ्य एवं अध्यात्म प्रयोगशाला के दूसरे दिन बदरी नारायण सेवाग्राम, मेरठ से आए डॉ. गोपाल शास्त्री ने साधकों को संतुलित खानपान, स्वच्छता, संयम और व्यवस्थित जीवनशैली का महत्व समझाया। उन्होंने कहा कि स्वस्थ जीवन के लिए केवल भोजन करना पर्याप्त नहीं है, बल्कि यह समझना भी जरूरी है कि कब, कितना और क्यों खाना चाहिए। उनका संदेश था—'कम खाओ-गम भगाओ, व्यस्त रहो-मस्त रहो।' डॉ. गोपाल शास्त्री ने कहा कि अनियमित खानपान और शरीर की आवश्यकताओं से अधिक भोजन करना स्वास्थ्य संबंधी परेशानियों का कारण बन सकता है। उन्होंने 'जहां कूड़ा, वहां कीड़ा, जहां गोबर, वहां गैस' का उदाहरण देते हुए स्वच्छता और अपशिष्ट के उचित प्रबंधन की उपयोगिता बताई। उन्होंने कहा कि शरीर पांच तत्वों से बना है और स्वस्थ रहने के लिए इनका संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। आवश्यकता से अधिक भोजन करने और शरीर की प्राकृतिक प्रक्रियाओं की अनदेखी करने से पाचन संबंधी समस्याएं बढ़ सकती हैं। उन्होंने घर में अनावश्यक वस्तुओं के संचय की तुलना शरीर में अनुपयोगी पदार्थों के जमा होने की प्रवृत्ति से करते हुए कहा कि जीवन में आवश्यक वस्तुओं का ही संग्रह करना चाहिए। प्रयोगशाला के दौरान साधक सत्यनारायण शर्मा एडवोकेट, राकेश डालमिया और रवि कौशिक ने भी अपने विचार साझा किए।

ये रहे मौजूद

कार्यक्रम में विनय शर्मा, हरीश जैन, ढुलीचंद यादव, गुरचरण, दयानंद रहेजा, सुनील मेहता, रवि प्रकाश कौशिक, बलवंत सिंह यादव, प्रवीन वर्मा, ब्रह्म हंस करनाल, सीमा मेहता, शोभा रानी और देवकी सहित सैकड़ों साधक उपस्थित रहे।



भाजपा के कमल के फूल का बटन दबाओ, जितने चाहो काम करवाओ

उकलाना। खंड के गांव चमार खेड़ा में कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा का पंचायत की ओर से स्वागत किया गया। इस दौरान पूर्व मंत्री अनूप धानक ट्रैक्टर के सारथी बने और मंत्री को ट्रैक्टर पर सवार करवाकर कार्यक्रम स्थल तक लेकर पहुंचे। ट्रैक्टर पर भाजपा जिला अध्यक्ष आशा खेदड़, पूर्व जिला अध्यक्ष सतबीर वर्मा और बरवाला मार्केट कमेटी के अध्यक्ष प्रवीण सैनी भी सवार थे। इस मौके पर गांव में उत्कृष्ट कार्य करने वाले सफाई कर्मी रामनिवास को भी सम्मानित किया गया। इसके अलावा मंत्री ने गांव में डॉ. भीमराव अंबेडकर भवन की नींव रखी। कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने ग्रामीणों को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा सरकार में बिना पर्ची और बिना खर्ची के योग्य युवाओं को रोजगार मिल रहा है। उन्होंने भाजपा के चुनाव चिह्न कमल के फूल का जिक्र करते हुए कहा कि भाजपा सरकार में लोग अपने काम करवा सकते हैं और विकास कार्यों में किसी प्रकार की रुकावट नहीं आने दी जाएगी।

ग्रामीणों ने भाखड़ा का पानी उपलब्ध करवाने की मांग रखी

मकान का सौदा कर 12 लाख हड़पने का आरोप, तीसरे पक्ष के नाम करवाई रजिस्ट्री

- सिविल लाइन थाना ने तीन लोगों के खिलाफ दर्ज किया केस

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

पटेल नगर स्थित गांधी नगर में एक मकान के सौदे में 12 लाख रुपये की बयाना राशि हड़पने और कथित तौर पर धोखाधड़ी कर मकान की रजिस्ट्री तीसरे पक्ष के नाम करवाने का मामला सामने आया है। पीड़ित की शिकायत पर सिविल लाइन पुलिस ने तीन आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शिकायतकर्ता ने आरोप लगाया है कि मकान को बैंक के कर्ज से मुक्त बताकर सौदा किया गया, लेकिन बाद में पता चला कि संपत्ति पर बैंक का लोन चल रहा था। इसके बाद तय तारीख पर रजिस्ट्री नहीं करवाई गई और कथित तौर पर मकान किसी अन्य व्यक्ति के नाम करवा दिया गया।

हरिकोट निवासी राममेहर ने पुलिस को दी शिकायत में बताया कि उन्हें और उनके साथी रमेश को मकान खरीदना था। इसी दौरान गांव आर्य नगर निवासी रमेशचंद्र, जो प्रॉपर्टी डीलिंग का काम करता है, ने उन्हें पटेल नगर के गांधी नगर में 104.5 वर्ग गज का मकान दिखाया। शिकायत के अनुसार, मकान के मालिक सत्यपाल और बिचौलिए रमेशचंद्र ने भरोसा दिलाया कि संपत्ति पूरी तरह भारमुक्त है और उस पर किसी बैंक का कर्ज नहीं है। इस भरोसे के आधार पर मकान का सौदा 46.50 लाख रुपये में तय कर लिया गया।

12 लाख रुपये देकर किया था इकरारनामा

राममेहर के अनुसार, 13 फरवरी 2025 को मकान के सौदे का इकरारनामा किया गया था। इसके तहत आरोपियों को 12 लाख रुपये बयाना राशि के रूप में दिए गए, जिसमें पांच लाख रुपये चेक के माध्यम से और सात लाख रुपये नकद दिए गए थे। इकरारनामे में रजिस्ट्री करवाने की तारीख 25 मई 2025 तय की गई थी। शिकायतकर्ता का आरोप है कि सौदा करते समय मकान पर चल रहे बैंक लोन की जानकारी उनसे छिपाई गई थी।

रजिस्ट्री करवाने तहसील नहीं पहुंचे आरोपी

शिकायत में बताया गया कि बाद में राममेहर को पता चला कि मकान पर आईसीआईसीआई बैंक का लोन चल रहा है। इस बारे में जानकारी मिलने पर जब उन्होंने आरोपियों से बात की तो उन्हें आश्वासन दिया गया कि निर्धारित तारीख से पहले लोन चुका दिया जाएगा। इसके बाद 25 मई 2025 को अवकाश होने के कारण राममेहर 26 मई को बकाया राशि और स्टांप पेपर लेकर तहसील कार्यालय पहुंचे, लेकिन आरोप है कि आरोपी रजिस्ट्री करवाने नहीं पहुंचे। शिकायतकर्ता के अनुसार, इसके बाद आरोपियों ने फोन उठाना भी बंद कर दिया।

राजबाला के नाम रजिस्ट्री करवाने का आरोप

राममेहर ने आरोप लगाया कि सत्यपाल, रमेशचंद्र और सेक्टर 21, निवासी राजबाला ने आपस में मिलीभगत करके मकान की रजिस्ट्री राजबाला के नाम करवा दी। शिकायतकर्ता का कहना है कि जब उन्होंने इस पर आपत्ति जताई और अपनी बयाना राशि वापस मांगी तो आरोपियों ने पैसे लौटाने से इनकार कर दिया। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि विरोध करने पर उन्हें जान से मारने की धमकी दी गई। पीड़ित ने पुलिस से मामले में कार्रवाई कर अपनी राशि वापस दिलवाने और आरोपियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने की मांग की है। सिविल लाइन पुलिस ने शिकायत के आधार पर तीनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। पुलिस का कहना है कि मामले की जांच की जा रही है। जांच के दौरान मकान के सौदे, बैंक लोन, बयाना राशि के भुगतान और रजिस्ट्री से जुड़े तथ्यों की पड़ताल की जाएगी।

एनएसएस शिविर में छात्राओं को साइबर सुरक्षा व आत्मरक्षा के प्रति किया जागरूक



हांसी। एनएसएस शिविर में छात्राओं को गुड टच-बैड टच, तनावमुक्त जीवन और परीक्षा के डर पर विजय पाने के दिए टिप्स देती स्कूल प्राचार्या रेनू बंसल

गुड टच-बैड टच, तनावमुक्त जीवन और परीक्षा के डर पर विजय पाने के दिए टिप्स

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हांसी

शहीद भगत सिंह रोड़ स्थित श्री सनातन धर्म कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में शनिवार को राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) के तहत एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में छात्राओं को साइबर सुरक्षा, आत्मरक्षा, व्यक्तिगत सुरक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता और सामाजिक जिम्मेदारी के प्रति जागरूक किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत जुम्बा गतिविधि और लक्ष्यगीत के साथ हुई। इसके बाद छात्राओं ने समाज एवं राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन करने और सेवा भावना से कार्य करने की शपथ ली। शिविर के दौरान साइबर सुरक्षा, सेल्फ डिफेंस, तनावमुक्त जीवन, परीक्षा के डर पर विजय तथा गुड टच-बैड टच जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूकता सत्र आयोजित किए गए। इसके अलावा क्लैपिंग थैरेपी और ओपन माइक गतिविधियों के माध्यम से छात्राओं को सकारात्मक सोच अपनाने और बेझिझक अपने विचार व्यक्त करने के लिए प्रेरित किया गया। विद्यालय की प्राचार्या रेनू बंसल ने कहा कि एनएसएस जैसी गतिविधियां छात्राओं में अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक संवेदनशीलता और सेवाभाव विकसित करती हैं। उन्होंने छात्राओं से शिविर की गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेने और जीवन में सीखी गई बातों को अपनाने का आह्वान किया।

एसडी मॉडर्न स्कूल में टेकक्वेस्ट क्विज में विद्यार्थियों ने दिखाया तकनीकी ज्ञान

हांसी। एसडी मॉडर्न पब्लिक स्कूल में शनिवार को तीसरी से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए अंतरसदनीय कंप्यूटर टेकक्वेस्ट क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में कंप्यूटर और आधुनिक तकनीक से जुड़े सवाल पूछे गए। विद्यालय में अक्टूबर माह को साइबर सुरक्षा जागरूकता एवं कंप्यूटर साक्षरता माह के रूप में मनाया जा रहा है। इसी अभियान के तहत विद्यार्थियों को तकनीकी ज्ञान, डिजिटल सुरक्षा और कंप्यूटर के व्यावहारिक उपयोग के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से क्विज आयोजित की गई। कार्यक्रम कंप्यूटर शिक्षक पूजा वालिया, डॉ. रश्मि जैन और पवन कुमार की देखरेख में हुआ। सीनियर ग्रुप में सुभाष सदन के रायका व परब्रह्म (कक्षा सातवीं), मानवी व वृंदा (कक्षा आठवीं) और हिमाली (कक्षा दसवीं) ने प्रथम स्थान हासिल किया। जूनियर ग्रुप में विवेकानंद सदन के रोनित (कक्षा पांचवीं), इवान (कक्षा चौथी) और शाइन (कक्षा तीसरी) प्रथम रहे। प्रधानाचार्या ऋतु सिंह ने विजेताओं को मेडल व प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया। कंप्यूटर साइंस प्रदर्शनी में सर्वश्रेष्ठ मॉडल बनाने पर कक्षा 12वीं के अर्पित सिंह तथा कक्षा आठवीं के दक्ष कुमार, भव्या तायल और शोभित को भी पुरस्कृत किया गया।



एफसी कॉलेज में वूमेन सेल की ओर से भव्य दिवाली फेस्ट मनाया



- पशु चिकित्सा के महत्व, शैक्षणिक नियमों और छात्र सुविधाओं से कराया अवगत

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (लुवास), के पशु चिकित्सा महाविद्यालय में शैक्षणिक सत्र 2026-27 के बीवीएससी एंड एएच (पशु चिकित्सा विज्ञान एवं पशुपालन) प्रथम वर्ष के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को महाविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था, पाठ्यक्रम, नियमों, सुविधाओं तथा विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों से परिचित कराना था, ताकि वे नए शैक्षणिक वातावरण में सहजता से समायोजित होकर अपनी अध्ययन यात्रा की प्रभावी शुरुआत कर सकें। कार्यक्रम में पशु चिकित्सा महाविद्यालय के अधिष्ठाता प्रो. (डॉ.) अनीश यादव मुख्य अतिथि तथा विद्यार्थी कल्याण एवं संपदा अधिकारी डॉ. संदीप गुप्ता विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। मुख्य अतिथि प्रो. (डॉ.) अनीश यादव ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत करते हुए उन्हें राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा (नीट) के माध्यम से प्रतिष्ठित महाविद्यालय में प्रवेश प्राप्त करने पर बधाई दी। उन्होंने विद्यार्थियों से समर्पण, अनुशासन और संवेदनशीलता के साथ अध्ययन करने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न विशेषज्ञों ने विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की शैक्षणिक व्यवस्था और उपलब्ध सुविधाओं की जानकारी दी। इस अवसर पर मानव संसाधन प्रबंधन विभाग की अध्यक्ष डॉ. सोनिया सिंधु ने लैंगिक संवेदनशीलता और यौन उत्पीड़न की रोकथाम के विषय पर जागरूक किया।

छात्राओं ने स्टॉल लगाकर दिखाई हुनरमंद प्रतिभा

हिसार। फतेह चंद महिला महाविद्यालय में वूमेन सेल के तत्वावधान में भव्य दिवाली फेस्ट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर महाविद्यालय की छात्राओं ने अपनी रचनात्मकता, कलात्मक प्रतिभा और उद्यमशीलता का बेहतरीन परिचय देते हुए परिसर में विभिन्न प्रकार की आकर्षक स्टॉल्स सजाईं। फेस्ट के दौरान फूड स्टॉल्स, गेम्स स्टॉल्स के साथ-साथ छात्राओं द्वारा अपने हाथों से तैयार की गई ज्वेलरी, ड्रेसेज, दिवाली डेकोरेशन आइटम्स, नेल आर्ट, परांदे, थाली डेकोरेशन, पेंटिंग और वॉल आर्ट जैसी हस्तनिर्मित वस्तुएं मुख्य आकर्षण का केंद्र रहीं। छात्राओं की इस कलात्मक अभिव्यक्ति और कड़ी मेहनत ने पूरे आयोजन को बेहद खास बना दिया। इसके अलावा, रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के तहत छात्राओं ने पंजाबी, हरियाणवी और राजस्थानी लोक संस्कृति पर आधारित मनमोहक ग्रुप डांस प्रस्तुत कर उत्सव के माहौल को और अधिक जीवंत कर दिया। महाविद्यालय की प्राचार्या डॉ. अनीता सहरावत व कार्यक्रम की आयोजक डॉ. पल्लवी आर्या ने छात्राओं का उत्साहवर्धन किया।



हिसार। सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती छात्राएं। फोटो : हरिभूमि

चारों धाम पार्क में लगाए औषधीय पौधे, उचित देखभाल का लिया संकल्प

हिसार। पटेल नगर की आठ मरला कॉलोनी स्थित चारों धाम पार्क में सोसायटी के प्रधान चंद्र भान गांधी की अध्यक्षता में पौधारोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान पार्क में कई औषधीय पौधे लगाए गए। प्रधान चंद्र भान गांधी ने कहा कि पार्क को हरा-भरा रखना सभी का कर्तव्य है और यह तभी संभव है जब हर सदस्य निस्वार्थ भाव से आगे आए। कार्यक्रम में उत्कृष्ट योगदान के लिए सक्रिय सदस्य राजेश गांधी को सम्मानित किया गया। इस मौके पर पतंजलि योग के प्रदेश प्रभारी ईश आर्य, अशोक लूथरा, गोपाल दास मनचंदा, अजय खन्ना, हरमिंदर सिंह सूबेदार, कुलदीप गावड़ी, बंसी बांगा, कमल आनंद और वीरभान ग्रोवर सहित कई सदस्य मौजूद रहे।

मेला गुरु गोरखनाथ जी कॉलेज में रोजगार मेला लगा

26 कंपनियों ने लिया भाग, 180 विद्यार्थियों ने दिए इंटरव्यू

रोजगार मेले बेरोजगारी दूर करने में निभाते हैं अहम भूमिका : कुलपति



हिसार। रोजगार मेले में हिस्सा लेते युवा। फोटो : हरिभूमि

हरिभूमि न्यूज ▶▶ हिसार

गुरु गोरखनाथ जी राजकीय महाविद्यालय के प्लेसमेंट सेल की ओर से महाविद्यालय परिसर में एक रोजगार मेले का आयोजन किया गया। इस मेले में 26 नामचीन कंपनियों ने भाग लिया, जबकि विभिन्न क्षेत्रों से आए 440 विद्यार्थियों ने अपना पंजीकरण करवाया। इनमें से 180 विद्यार्थियों ने विभिन्न कंपनियों के समक्ष इंटरव्यू देकर रोजगार प्राप्त करने की दिशा में अपनी सशक्त दावेदारी पेश की। कार्यक्रम में चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय भिवानी की कुलपति प्रो. दीप्ति धर्माणी ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि इस प्रकार के रोजगार मेले समाज में बेरोजगारी की समस्या को दूर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

5 जिलों के विद्यार्थियों ने भुनाया मौका

रोजगार मेले की संरक्षक एवं महाविद्यालय की प्राचार्या प्रो. अंजू चौधरी ने बताया कि प्लेसमेंट सेल द्वारा आयोजित इस सुव्यवस्थित मेले में हिसार सहित आसपास के पांच जिलों के विद्यार्थियों ने हिस्सा लिया और साक्षात्कार दिए। वहीं, प्लेसमेंट सेल के संयोजक डॉ. सतीश वर्मा ने बताया कि विभिन्न कंपनियों के प्रतिनिधियों ने विद्यार्थियों की शैक्षणिक योग्यता, कौशल और कार्यक्षमता के आधार पर उनका मूल्यांकन किया।

ये रहे मौजूद

इस अवसर पर महाविद्यालय के उप प्राचार्या डॉ. राजेंद्र सेवदा, मीडिया प्रभारी मनोज कुमार व डॉ. राजपाल, कर्नल राज सिंह सिरोही, प्रियांशु बंसल, राहुल आर्य, सहित प्लेसमेंट सेल के सदस्य डॉ. वेद भूषण, डॉ. कुलदीप सिंह, सोनू, अंजू, सरिता, राकेश कुमार, धर्मेंद्र, खुशबू, पूनम, मीना आदि उपस्थित थे।

खबर संक्षेप

महात्मा आनंद स्वामी की स्मृति में प्रेरणा सप्ताह

हिसार। डीएवी पब्लिक स्कूल, कैमरी रोड में महात्मा आनंद स्वामी की स्मृति में प्रेरणा सप्ताह हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। पूरे सप्ताह विद्यालय में वैदिक संस्कारों,

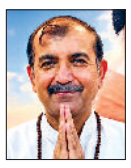

स्वामी संजय।

आर्य समाज, महात्मा आनंद स्वामी के जीवन एवं शिक्षाओं तथा नैतिक मूल्यों पर आधारित विभिन्न गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों द्वारा महात्मा आनंद स्वामी की स्मृति में शोभायात्रा भी निकाली गई। एक सप्ताह तक चले इस प्रेरणा सप्ताह के समापन समारोह में डॉ. प्रमोद योगार्थी मुख्य अतिथि के रुप में उपस्थित हुए। उन्होंने यज्ञ में भाग लेने के पश्चात वैदिक परिचर्चा कार्यक्रम में सहभागिता की। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने भाषणों, कविताओं एवं भजनों के माध्यम से महात्मा आनंद स्वामी को श्रद्धांजलि अर्पित की।

सोनू अठवाल बने हेल्थ कर्मचारी संघ के प्रधान

हिसार। भारतीय मजदूर संघ से संबंधित हरियाणा पब्लिक हेल्थ कर्मचारी संघ की शाखा-I का प्रतिनिधि अधिवेशन गांव रावलवास खुर्द स्थित जलघर में आयोजित किया गया। अधिवेशन में सर्वसम्मति से नई कार्यकारिणी का गठन किया गया। इसमें सोनू अठवाल को शाखा प्रधान और आजाद सिंह को सचिव चुना गया। नई कार्यकारिणी में शमशेर सिंह को चेयरमैन, सोनू अठवाल को प्रधान, प्रेम कुमार को वरिष्ठ उपप्रधान, आजाद सिंह को सचिव, कपिल कुमार को संगठन सचिव, नरेश भूरिया को कोषाध्यक्ष और वीरेंद्र कुमार को ऑडिटर नियुक्त किया गया। इसके अलावा सुकरमपाल को मुख्य सलाहकार, हनुमान और पवन पूनियां को उपप्रधान, परमवीर को उपकोषाध्यक्ष, विनोद कुमार को प्रेस सचिव तथा अनिल कुमार को सह-सचिव की जिम्मेदारी सौंपी गई। अधिवेशन में प्रदेश संगठन महामंत्री चांदराम चहल ने चुनाव पर्यवेक्षक के रूप में शिरकत की, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता हिसार शाखा के प्रधान सुरेश लांबा ने की।

पेंशनर्स समाज का ऑल इण्डिया अधिवेशन स्थगित

हिसार। हरियाणा स्टेट पैंशनर्ज समाज की कार्यकारिणी की बैठक जिलाध्यक्ष रोहताश छाछिया की अध्यक्षता में क्रांतिमान पार्क में हुई। बैठक में कहा गया कि 30 अक्टूबर से एक नवम्बर तक कुरुक्षेत्र में ऑल इण्डिया फैडरेशन का अधिवेशन तथा नई कार्यकारिणी का चुनाव होना प्रस्तावित था, जिसे अपरिहार्य कारणों से आगामी आदेशों तक स्थगित कर दिया गया है। कार्यकारिणी के मुख्य सरंक्षक राजेन्द्र सिंह नैन की माताजी के आकस्मिक निधन पर शोक प्रस्ताव पारित किया गया तथा आत्मिक शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया। इस अवसर पर चेयरमैन कृष्ण कुमार दुआ, गुलाब सिंह खेदड, जसवन्त कुमार, रणधीर सिंह बल्हारा, सुभाष चन्द्र वर्मा एवं अमर सिंह आदि रहे।

शुक्रवार रात को आई एक सकारात्मक खबर ने पूरे शहर को बड़ी राहत दी

दो दिन के अंधेरे और किल्लत के बाद लौटी जिंदगी बिजली-पानी बहाल होने से लोगों ने ली राहत की सांस

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

दो दिनों तक अंधेरे, पानी की बूंद-बूंद को तरसते लोग और ठप पड़े कारोबार हिसारवासियों के लिए किसी इम्तिहान से कम नहीं था। लेकिन आखिरकार शुक्रवार रात को आई एक सकारात्मक खबर ने पूरे शहर को बड़ी राहत दे दी। सरकार और बिजली कर्मचारियों के बीच चली मैराथन वार्ता आखिरकार सफल रही और हड़ताल समाप्त होने के साथ ही हिसार में एक बार फिर जनजीवन पटरी पर लौट आया है।

बिजली गुल, तो थम गई जिंदगी की रफ्तार

कहानी की शुरुआत 21 अक्टूबर की रात करीब 10 बजे हुई, जब बिजली कर्मचारियों के अचानक हड़ताल पर जाने से शहर से लेकर ग्रामीण इलाकों तक का सिस्टम चरमरा गया। बिजली गुल होने का असर सिर्फ रोशनी तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसका सीधा और घातक प्रहार शहर की पेयजल व्यवस्था पर पड़ा। देखते ही देखते घरों के इनवर्टर जवाब दे चुके थे, मोबाइल फोन और जरूरी गैजेट्स बंद होने लगे थे। दुकानों के शटर गिर गए और बाजार की रौनक गायब हो गई। पहले दिन तो लोगों ने जैसे-तैसे हालात से समझौता कर लिया, लेकिन जैसे ही दूसरा दिन चढ़ा, लोगों का सब्र का बांध टूटने लगा।

उम्मीद की किरण: शुक्रवार रात बनी बात

जनता के बढ़ते आक्रोश और विकट होती स्थिति को भांपते हुए सरकार और हड़ताली कर्मचारियों के बीच बातचीत का दौर तेज हुआ। आखिरकार, तमाम वार्ताओं के बाद शुक्रवार की रात वह सुखद पल आया, जब दोनों पक्षों के बीच सहमति बन गई और हड़ताल खत्म करने का ऐलान कर दिया गया। हड़ताल खत्म होने की घोषणा के साथ ही बिजली कर्मियों ने तुरंत मोर्चा संभाला। शहर के विभिन्न इलाकों में फाल्ट दूर करने और बिजली आपूर्ति सुचारू करने का काम युद्धस्तर पर शुरू हुआ। देर रात तक कई इलाकों में जगमगाहट लौटने लगी और अंधेरे में डूबा हिसार एक बार फिर रोशन हो उठा।

जब सड़कों पर उतरा गुस्सा और गहराया संकट: पेयजल संकट ने आग में घी का काम किया। पानी की एक-एक बूंद के लिए लोगों को भारी जद्दोजहद करनी पड़ी। स्थिति इतनी तनावपूर्ण हो गई कि शहर के कई हिस्सों में लोग सड़कों पर उतर आए। कई जगहों पर आम जनता और कर्मचारियों के बीच तीखी नोकझोंक और आमने-सामने की स्थिति तक बन गई।

सुबह की धूप के साथ लौटी पेयजल व्यवस्था

रात को बिजली बहाल होने के बाद से ही शहरवासियों को इस बात का भरोसा हो गया था कि सुबह तक पानी का संकट भी दूर हो जाएगा और हुआ भी बिल्कुल वैसा ही। शनिवार सुबह होते ही शहर के लगभग सभी क्षेत्रों में पेयजल आपूर्ति सुचारू रूप से शुरू हो गई। जैसे ही नलों में पानी आया, पिछले करीब डेढ़ दिनों से पानी की किल्लत झेल रहे परिवारों ने चैन की सांस ली। घरों में चूल्हा-चौका और कामकाज सामान्य हुआ, तो बाजारों में भी चहल-पहल लौट आई।

24.93 लाख मीट्रिक टन धान की खरीद

- किसानों को 3,447 करोड़ का भुगतान

हांसी। हरियाणा में खरीफ सीजन 2026-27 के दौरान धान खरीद जारी है। भाजपा जिला अध्यक्ष अशोक सैनी ने दावा किया कि प्रदेश सरकार किसानों की फसल न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीदने और उन्हें समय पर भुगतान करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने बताया कि 21 अक्टूबर तक प्रदेश की मंडियों में 30.26 लाख मीट्रिक टन धान की आवक हुई, जिसमें से 24.93 लाख मीट्रिक टन की खरीद की जा चुकी है। खरीदे गए धान में से करीब 75 प्रतिशत का उठान भी हो चुका है। अशोक सैनी के अनुसार, केंद्र सरकार ने इस सीजन में 58 लाख मीट्रिक टन धान खरीद का लक्ष्य निर्धारित किया है।

मेले का दौरा करते समय बचपन की यादों में खोये विधानसभा डिप्टी स्पीकर

देश की समृद्ध सभ्यता एवं संस्कृति से जोड़ने का शानदार मंच है राखीगढ़ी

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौंद

हरियाणा विधानसभा के डिप्टी स्पीकर कृष्ण लाल मिढ़ा ने शनिवार को अंतरराष्ट्रीय राखीगढ़ी महोत्सव में शिरकत की। इस दौरान उन्होंने राखीगढ़ी में उत्खनन के दौरान प्राप्त हड़प्पा सभ्यता की प्राचीन वस्तुओं पर आधारित प्रदर्शनी का अवलोकन किया। साथ ही विभिन्न विभागों, स्वयं सहायता समूहों और उद्यमियों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का निरीक्षण कर वहां प्रदर्शित उत्पादों एवं गतिविधियों की जानकारी प्राप्त की। स्टॉल संचालकों से संवाद करते हुए उन्होंने कहा कि महोत्सव में स्वदेशी उत्पादों की आकर्षक प्रदर्शनी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के स्वदेशी अपनाने के विजन को साकार करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। ऐसे आयोजन स्थानीय कारीगरों, उद्यमियों और स्वयं सहायता समूहों को अपने उत्पादों के प्रचार-प्रसार एवं बिक्री के लिए बेहतर मंच प्रदान करते हैं। महोत्सव के दौरान डिप्टी स्पीकर कृष्ण लाल मिढ़ा ने विभिन्न स्टॉलों का दौरा करते हुए वहां मौजूद पर्यटकों और स्टॉल संचालकों से बातचीत की। डिप्टी स्पीकर कृष्ण लाल मिढ़ा ने कहा कि राखीगढ़ी महोत्सव बच्चों, युवाओं और बुजुर्गों को देश की समृद्ध सभ्यता एवं संस्कृति से जोड़ने का शानदार मंच है। लगभग पांच हजार वर्ष पहले लोगों का रहन-सहन कैसा था, वे किस प्रकार के वस्त्र पहनते थे, कौन-से आभूषण धारण करते थे, कृषि कैसे करते थे तथा उनके गांव और शहर किस प्रकार विकसित थे, इन सभी सवालों के जवाब राखीगढ़ी की ऐतिहासिक विरासत से मिलते हैं।

- स्टॉल से खरीद कर कुल्फी की चुस्की ली, बच्चों के साथ एक प्लेट में पकौड़ियां खाई



नारनौंद। कार्यक्रम को देखते हुए डिप्टी स्पीकर कृष्ण मिढ़ा। फोटो: हरिभूमि

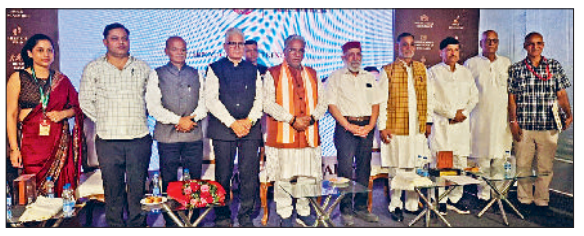

नारनौंद। इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस के दौरान प्रख्यात पुरातत्वविद् डॉ. वसंत शिंदे, पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार व अन्य। फोटो: हरिभूमि

राखीगढ़ी की विरासत ऐतिहासिक पहचान, इसे सहेजना हम सबकी जिम्मेदारी : कृष्ण लाल पवार

नारनौंद। हरियाणा के विकास एवं पंचायत मंत्री कृष्ण लाल पंवार ने कहा कि राखीगढ़ी की ऐतिहासिक धरती हमारी प्राचीन सभ्यता, ज्ञान, कौशल और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत की पहचान है। यहां मिले पुरातात्विक अवशेष हजारों वर्ष पुराने मानव जीवन और विकसित नगरीय व्यवस्था की जानकारी देते हैं। इस धरोहर का संरक्षण करना और इसके ऐतिहासिक महत्व को देश-दुनिया तक पहुंचाना हम सभी का दायित्व है। कृष्ण लाल पंवार शनिवार को अंतरराष्ट्रीय राखीगढ़ी महोत्सव के अंतर्गत आयोजित अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस को संबोधित कर रहे थे। इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस में डेक्कन विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं प्रख्यात पुरातत्वविद् डॉ. बसंत शिंदे, मुख्यमंत्री के ओएसडी भारत भूषण भारती, हरियाणा व्यापारी कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष राजेश ठकराल, हरियाणा वेयरहाउस कॉरपोरेशन के अध्यक्ष रामकिशन, पुरातत्वविद डॉ कुलदीप अग्निहोत्री आदि रहे।



अग्रोहा धाम में वार्षिक मेला आज, सभी तैयारियां पूरी

- दुल्हन की तरह सजा धाम, उमड़ेगा आस्था का सैलाब : बजरंग गर्ग

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

अग्रोहा धाम में लगने वाले विशाल वार्षिक मेले की सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। अग्रोहा धाम वैश्य समाज के राष्ट्रीय कार्यकारी अध्यक्ष व हरियाणा प्रदेश व्यापार मंडल के प्रांतीय अध्यक्ष बजरंग गर्ग ने धाम में मेले की तैयारियों का जायजा लेने के बाद यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि अग्रोहा धाम को रंग-बिरंगी लाइटों, फूलों और लड़ियों से दुल्हन की तरह सजाया गया है। मेले को लेकर श्रद्धालुओं में भारी उत्साह है और देश-प्रदेश भर से बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने की उम्मीद है। मेले को भव्य और व्यवस्थित बनाने के लिए परिसर में अलग-अलग तीन स्टेज बनाई गई हैं। इसके अलावा ट्रेड फेयर, विभिन्न प्रकार के झूले, और आकर्षक झांकियां मुख्य आकर्षण का केंद्र रहेंगी। धाम

प्रमुख आयोजन

- ⏭प्रातः 05:00 बजे: शक्ति सरोवर स्नान
- ⏭प्रातः 07:00 बजे: सभी मंदिरों में विशेष आरती
- ⏭प्रातः 08:00 बजे: भव्य महिला कलश यात्रा
- ⏭प्रातः 09:00 बजे: छप्पन भोग व सवामणि का प्रसाद
- ⏭प्रातः 10:15 बजे: ध्वजारोहण
- ⏭दोपहर 12:00 बजे: भव्य सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं मुख्य सम्मेलन

दिग्गज हस्तियां करेंगी शिरकत

वार्षिक मेले में कई हस्तियां अपनी उपस्थिति दर्ज कराएंगी। मेले में हिमाचल के राज्यपाल कविंद्र गुप्ता, हरियाणा के निकाय मंत्री विपुल गोयल, पंजाब के मंत्री वीरेंद्र गोयल, पूर्व राज्यसभा सांसद डॉ. सुभाष चंद्रा, हिसार की विधायक सावित्री जिंदल, ब्रह्ममहर्षि जगद्गुरु कुमार स्वामी, मशहूर कलाकार मासूम शर्मा और प्रसिद्ध भजन गायिका अंजनी द्विवेदी समेत कई प्रमुख लोग शामिल होंगे।

कुरुक्षेत्र में प्रशिक्षित श्वानों की कार्यप्रणाली देखी

- लुवास के विद्यार्थियों ने किया पुलिस डॉग स्कवायड व दवा निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन
- करनाल में दवा निर्माण की औद्योगिक प्रक्रिया की ली जानकारी

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार



हिसार। कुरुक्षेत्र के दौरे पर गया लुवास विद्यार्थियों का दल। फोटो: हरिभूमि

लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के पशु चिकित्सा महाविद्यालय के चतुर्थ वर्ष के विद्यार्थियों ने एक दिवसीय शैक्षणिक दौरे के दौरान पुलिस डॉग स्कवायड की कार्यप्रणाली और दवा निर्माण की औद्योगिक प्रक्रिया का अध्ययन किया। इस दौरे के तहत विद्यार्थियों ने कुरुक्षेत्र स्थित डॉग के-9 स्क्वॉड केंद्र और करनाल स्थित कारस लैबोरेटरीज के विनिर्माण संयंत्र का भ्रमण किया। दौरे के पहले चरण में विद्यार्थियों ने कुरुक्षेत्र स्थित डॉग के-9 स्कवायड केंद्र में पुलिस कार्यों में प्रशिक्षित श्वानों की महत्वपूर्ण भूमिका को समझा। उन्हें बताया गया कि किस प्रकार ये श्वान मादक पदार्थों और विस्फोटकों की पहचान करने के साथ-साथ अपराधों की जांच में पुलिस की सहायता करते हैं। इस दौरान हरियाणा स्टेट नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के चार नार्को डॉग, स्टेट क्राइम ब्रांच का एक ट्रेकर डॉग और सीआईडी का एक विस्फोटक पहचानने वाला डॉग शामिल रहा। प्रशिक्षित श्वानों ने परिसर, वाहनों और सामान की तलाशी लेकर अपनी दक्षता का प्रदर्शन किया।

ज्ञानवर्धक रहा शैक्षिक भ्रमण

विद्यार्थियों के इस समूह का नेतृत्व पशु चिकित्सा विभाग की प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष डॉ. दिव्या अग्निहोत्री तथा सहायक प्रोफेसर डॉ. गौरव चराया ने किया। यह शैक्षणिक दौरा विद्यार्थियों के लिए ज्ञानवर्धक और अनुभवपरक रहा। इसके माध्यम से उन्हें पुलिस कार्यों में प्रशिक्षित श्वानों के योगदान तथा दवा निर्माण की औद्योगिक प्रक्रिया की विस्तृत जानकारी मिली, जिससे उनके व्यावहारिक ज्ञान और पेशेवर समझ को और मजबूत करने में मदद मिली।

पूर्व मंत्री ने भाजपा सरकार व मुख्य विपक्षी दल कांग्रेस की भूमिका पर उठाए सवाल

हरिभूमि न्यूज ⏭!!!

इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं पूर्व वित्त मंत्री प्रो. संपत सिंह ने समानांतर बिजली वितरण लाइसेंस के मामले में भाजपा सरकार की भूमिका पर सवाल उठाते हुए कड़ी आलोचना की है। उन्होंने आरोप लगाया कि मुख्यमंत्री और बिजली मंत्री के सरकार द्वारा इस व्यवस्था का विरोध करने के दावों के बावजूद, हरियाणा विद्युत नियामक आयोग के समक्ष राज्य सरकार ने न तो कोई औपचारिक आपत्ति दर्ज कराई और न ही प्रस्ताव का स्पष्ट विरोध किया। प्रो. सिंह ने चिंता जताई कि नियामक आयोग के फैसले से गुरुग्राम और नूंह में समानांतर बिजली वितरण लाइसेंस का रास्ता खुल गया है। उनके अनुसार, इससे हरियाणा के सरकारी बिजली वितरण निगमों के भविष्य और वित्तीय स्थिति पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता है। उन्होंने कहा कि निजी कंपनियां औद्योगिक एवं व्यावसायिक क्षेत्रों के अधिक मुनाफे वाले उपभोक्ताओं को अपने साथ जोड़ सकती हैं, जबकि सरकारी बिजली निगमों पर बिजली नेटवर्क के रखरखाव, गांवों तक बिजली पहुंचाने, कृषि क्षेत्र को आपूर्ति करने तथा गरीब और कमजोर वर्गों को राहत देने के लिए क्रॉस-सब्सिडी का भार बना रहेगा। इस अवसर पर इनेलो के प्रदेश प्रधान महासचिव गौरव संपत सिंह और जिला प्रवक्ता विनोद कस्वां एडवोकेट भी मौजूद रहे।

निगमों को एक समान मानना उचित नहीं



पत्रकारों से बातचीत में प्रो. संपत सिंह ने कहा कि वे इस मामले की पूरी कार्रवाई के दौरान स्वयं उपस्थित रहे हैं। उनके अनुसार, आयोग के समक्ष बिजली वितरण कंपनियों ने आपत्तियां दर्ज कराई थीं, लेकिन राज्य सरकार और सरकारी बिजली वितरण निगमों को एक समान मानना उचित नहीं है। उन्होंने मुख्य विपक्षी कांग्रेस की भूमिका पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि कांग्रेस ने भी आयोग के समक्ष कोई आपत्ति दर्ज नहीं कराई और न ही कार्यवाही में भाग लिया।

निबंध लेखन में प्रीति ने मारी बाजी



- राजकीय महाविद्यालय बरवाला में प्रतियोगिता के विजेताओं को किया सम्मानित

बरवाला। राजकीय महाविद्यालय बरवाला के अर्थशास्त्र विभाग द्वारा निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता का संचालन स्वाति, सहायक प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग द्वारा किया गया। इस प्रतियोगिता के निर्णायक मंडल में मंजन सिंह, एक्सटेंशन लेक्चरर, डॉ. सोनिया, सहायक प्रोफेसर तथा दीक्षा, सहायक प्रोफेसर शामिल रहे। निर्णायक मंडल द्वारा घोषित परिणामों के अनुसार, प्रीति बीए द्वितीय वर्ष ने प्रथम स्थान और रवि कुमार बीए तृतीय वर्ष ने द्वितीय स्थान तथा अरुण कुमार बी.ए. द्वितीय वर्ष ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। डॉ. नीलम गिल ने प्रतियोगिता के सफल आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि इस प्रकार की शैक्षणिक गतिविधियाँ विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, आत्मविश्वास और अभिव्यक्ति क्षमता को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने विजेताओं को बधाई दी।

हरिभूमि
आवश्यक सूचना
जिन पाठकों को अखबार मिलने में किसी भी प्रकार की असुविधा हो रही हो या उनके घर में कोई अन्य अखबार दिया जा रहा हो वह इन टेलीफोन नम्बरों पर सम्पर्क करें या व्हाट्सअप करें :-
हरिभूमि, 783, पी.एल.ए., नजदीक टाउन पार्क, हिसार
फोन : 7988727916, 9315429403, 9253681005

सीसवाल धाम व किरमारा धाम के बाद तीसरा विशाल त्रिशूल स्थापित

- बालसमंद के शिव मंदिर में स्थापित हुआ 12 फीट ऊंचा भव्य त्रिशूल

हरिभूमि न्यूज ⏭हिसार

निकटवर्ती गांव बालसमंद स्थित करीब 200 वर्ष पुराने प्रसिद्ध सेठ सीतूराम शिव मंदिर परिसर में भक्तिमय वातावरण के बीच 12 फीट ऊंचे भव्य त्रिशूल की स्थापना की गई। गांव के समाजसेवी एवं श्रद्धालु राजेंद्र लौरा और उनके परिवार की ओर से संपन्न करवाए गए इस धार्मिक कार्य से मंदिर परिसर की शोभा और बढ़ गई है। इसके साथ ही बालसमंद का यह शिव मंदिर जिले में सीसवाल धाम व किरमारा धाम के बाद तीसरा ऐसा धार्मिक स्थल बन गया है, जहां विशाल त्रिशूल स्थापित किया गया है। त्रिशूल स्थापना के अवसर पर मंदिर परिसर में विशेष पूजा-अर्चना की गई और मंत्रोच्चारण के साथ धार्मिक अनुष्ठान संपन्न हुआ। इस अवसर पर समाजसेवी राजेंद्र लौरा ने कहा कि भगवान शिव की कृपा से उन्हें और उनके परिवार को इस धार्मिक कार्य को सेवा भाव से संपन्न करवाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उन्होंने कहा कि धार्मिक स्थलों के प्रति श्रद्धा और सेवा की भावना समाज को जोड़ने का



शिव मंदिर में स्थापित 12 फीट ऊंचे विशाल त्रिशूल के साथ समाजसेवी राजेंद्र लौरा एवं अन्य श्रद्धालु।

कार्य करती है। मंदिर कमेटी के पदाधिकारियों ने राजेंद्र लौरा और उनके परिवार के इस योगदान की सराहना करते हुए उन्हें सम्मानित किया। कार्यक्रम में बिजली संगठन के प्रधान प्रदीप लौरा, सरपंच प्रतिनिधि रणबीर ईश्वर लौरा, पूर्व सरपंच त्रिलोक सिंह, जयवीर सहारण, बिटू सेठ, अशोक आदि उपस्थित रहे।

100 मीटर में लिछमी व वीरेंद्र ने मारी बाजी

- राजकीय महाविद्यालय नारनौंद में 13वीं वार्षिक एथलेटिक मीट का आयोजन
- मुख्य अतिथि मेजर सुरेंद्र कुमार ने युवाओं को खेलों में करियर बनाने के लिए किया प्रेरित

हरिभूमि न्यूज ⏭नारनौंद

राजकीय महाविद्यालय नारनौंद में 13वीं वार्षिक एथलेटिक मीट का आयोजन उत्साह एवं उमंग के साथ किया गया। कार्यक्रम में मेजर सुरेंद्र कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर, केएम ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। महाविद्यालय के कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. पंकज गोयत ने मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मुख्य अतिथि मेजर सुरेंद्र कुमार ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए हरियाणा की खेल परंपरा, विशेष रूप से बॉक्सिंग के क्षेत्र में प्रदेश की उपलब्धियों और अपने खेल अनुभवों को साझा किया। वार्षिक एथलेटिक मीट के संयोजक डॉ. पंकज गोयत ने विद्यार्थियों को खेलों के महत्व से अवगत करवाया। कार्यक्रम का मंच संचालन डॉ. नैना एवं डॉ. अजय सैनी ने किया।



नारनौंद। एथलेटिक मीट के दौरान मुख्य अतिथि मेजर सुरेंद्र कुमार, कार्यवाहक प्राचार्य डॉ. पंकज गोयत एवं अन्य प्राध्यापक। फोटो: हरिभूमि

प्रतियोगिताओं के प्रमुख परिणाम

महिला वर्ग की 100 मीटर दौड़ में लिछमी प्रथम, कीर्ति द्वितीय और अंजलि तृतीय रहीं, जबकि पुरुष वर्ग में वीरेंद्र प्रथम, बजरंग द्वितीय और देवराज तृतीय रहे। महिलाओं वर्ग की 200 मीटर दौड़ में कीर्ति प्रथम, सोनू द्वितीय और लिछमी तृतीय रहीं, जबकि पुरुष वर्ग में बजरंग प्रथम, वीरेंद्र द्वितीय और देवराज तृतीय रहे। महिला वर्ग की 400 मीटर दौड़ में महिला वर्ग में सोनू प्रथम, लिछमी द्वितीय और कीर्ति तृतीय रहीं, जबकि पुरुष वर्ग में वीरेंद्र प्रथम, बजरंग द्वितीय और देवराज तृतीय रहे। महिलाओं की गोला फेंक में कीर्ति प्रथम, काफी द्वितीय और लिछमी तृतीय रहीं, जबकि पुरुष वर्ग में प्रवीण प्रथम, बजरंग द्वितीय और वीरेंद्र तृतीय रहे। महिला वर्ग की लंबी कूद में सोनू प्रथम, कीर्ति द्वितीय और लिछमी तृतीय रहीं, पुरुष वर्ग में वीरेंद्र प्रथम, बजरंग द्वितीय और देवराज तृतीय रहे। महिला वर्ग की ऊंची कूद में नेहा प्रथम, सोनू द्वितीय और कीर्ति तृतीय रहीं, पुरुष वर्ग में बजरंग प्रथम, वीरेंद्र द्वितीय और संदीप तृतीय रहे।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 25 अक्टूबर 2026

इन दिनों हर तरफ एलन मस्क की टेस्ला रोडस्टर कार को लेकर रॉकेट तकनीक और उड़ने की क्षमताओं से जुड़ी चर्चाएं हो रही हैं। रोडस्टर की प्रस्तावित उत्पादन समय सीमा 2028 बताई गई है। उड़ती हुई कारें निश्चित रूप से भविष्य के परिवहन का एक हिस्सा बन सकती हैं। लेकिन अभी इसे हकीकत बनने में कई सवालों और चुनौतियों का सामना करना होगा।

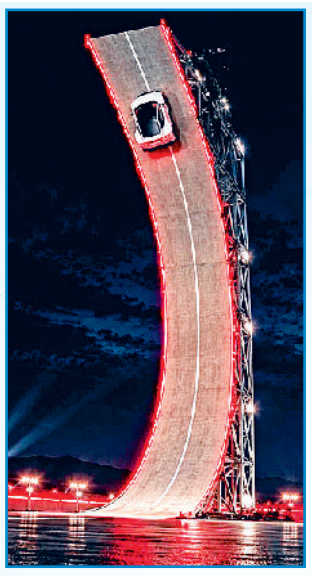



क्या सच होने वाला है उड़ती कार का सपना !

{ कवर स्टोरी / लोकमित्र गौतम }

उड़ती हुई कारों का सपना अब केवल विज्ञान कथाओं, हॉलीवुड फिल्मों और भविष्य की कल्पनाओं तक सीमित नहीं है। गुजरे 15 अक्टूबर 2026 को टेक्सास में टेस्ला की ऐसी ही उड़न कार नई रोडस्टर के प्रदर्शन ने इस अनुमान को और मजबूत किया है। एलन मस्क की टेस्ला के अलावा भी दुनिया की कई कंपनियां ऐसी कारों के विकास में काफी हद तक सफल हो चुकी हैं या इसके नजदीक पहुंच चुकी हैं, जो सड़क पर कार की तरह चलने के बजाय हवा में उड़ सकेंगी। कहीं इन्हें फ्लाइंग कार कहा जा रहा है, कहीं इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ एंड लैंडिंग यानी ईवीटीओएल और कहीं एयर टैक्सी। लेकिन एक बुनियादी सवाल अब भी रह-रहकर जेहन में आ रहा है कि क्या हम सचमुच उड़ती हुई कारों के युग की दहलीज पर खड़े हैं या तकनीक की चमक ने भविष्य की तस्वीर को वास्तविकता से कहीं ज्यादा आकर्षक बना दिया है? इस बात को समझना होगा कि सड़क पर चलने वाली कार, रॉकेट से जुड़ा प्रदर्शन और यात्रियों को लेकर उड़ने वाला प्रमाणित विमान- तीनों अलग-अलग चीजें हैं। भविष्य की परिवहन क्रांति को समझने के लिए इस अंतर को ध्यान में रखना जरूरी है।



कई देशों में बन रही ईवीटीओएल



नीदरलैंड में निर्मित पाल-वी लिबर्टी कार

आसान नहीं सपने का सच होना

बीते 15 अक्टूबर 2026 को एलन मस्क ने स्पेसएक्स की तकनीक से जुड़े थ्रस्टरों की मदद से अमेरिका के टेक्सास में अपनी बहुचर्चित और बहुप्रतीक्षित टेस्ला की नई रोडस्टर कार को एक घुमावदार रैंप से हवा में उछलते, पलटते और जमीन पर उतरते दिखाया और अपनी सपनीली उड़न कार को लेकर असाधारण दावे भी किए हैं। इसके बाद से उड़न कार की चर्चाएं एक बार फिर से सुर्खियों में आ गई हैं। लेकिन उड़ान के जानकारों के मुताबिक इस प्रदर्शन को सामान्य अर्थों में उड़ने वाली कार का प्रमाण नहीं माना जा सकता। कुछ क्षण हवा में उछलना और नियंत्रित उड़ान भरकर यात्रियों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुंचाना बिल्कुल अलग बात है। हालांकि इस घटना का महत्व फिर भी कम नहीं है। इसने एक बार फिर दिखाया कि सड़क परिवहन और एयरोस्पेस तकनीक के बीच की दूरी घटाने की महत्वाकांक्षा कितनी बड़ी हो चुकी है। मगर भविष्य की असली परीक्षा रोमांचक प्रदर्शन नहीं बल्कि सुरक्षा, उपयोगिता, लागत और नियामकीय मंजूरी होगी। साथ ही इसकी जोर-शोर से हो रही तैयारियों के बीच यह सवाल भी वाजिब है कि क्या हर कार को उड़ने की जरूरत होगी?

वास्तविकता को समझना होगा

फ्लाइंग कार से जुड़े सवालों का जवाब समझने के लिए पहले इसकी दो अलग अवधारणाओं को समझना होगा। पहली यह कि ऐसी कार, जो सड़क पर भी चल सके और जरूरत पड़ने पर उड़ भी सके। दूसरी है इलेक्ट्रिक एयर टैक्सी, जो सड़क पर चलने वाली कार नहीं बल्कि छोटी उड़ने वाली कार या मशीन है। इसे ही आमतौर पर ईवीटीओएल कहा जाता है यानी टैक्सी के रूप में एक विमान, जो बिजली से उड़ता हो और हेलीकॉप्टर की तरह सीधे ऊपर उठ सके और नीचे उतर सकता हो।

यह दूसरी अवधारणा फिलहाल ज्यादा व्यावहारिक दिखाई देती है। शहरों के बीच हर व्यक्ति की निजी उड़ने वाली कार की तुलना में हवाई अड्डे से शहर के केंद्र तक तेज परिवहन, महानगरों में सीमित दूरी की हवाई टैक्सी और आपातकालीन चिकित्सा सेवाएं पहले उपयोगी साबित हो सकती हैं। इससे जमीन पर मौजूद सड़क नेटवर्क को हटाने के बजाय उसके ऊपर एक नया परिवहन विकल्प तैयार होगा। हमें यह समझना होगा कि महानगरों में यातायात की समस्या केवल सड़कों की कमी नहीं है। आबादी का घनत्व, गलत शहरी नियोजन, पार्किंग, सार्वजनिक परिवहन की अपर्याप्तता और यात्रा की बढ़ती मांग भी इसके कारण हैं। ऐसे में उड़ती हुई कारों को हर समस्या का समाधान मानना जल्दबाजी होगी। कल्पना करें दिल्ली, मुंबई या बंगलुरु में हजारों निजी उड़ने वाली कारें एक साथ आसमान में उतर आएं, तब सवाल होगा कि उन्हें उड़ने की अनुमति कौन देगा, उनके लिए हवाई गलियारे कैसे निर्धारित होंगे, दुर्घटना की स्थिति में जिम्मेदारी किसकी होगी और वे कहां उतरेंगी? यदि हर इमारत की छत पर लैंडिंग की व्यवस्था करनी पड़े, तो शहरी ढांचे को पूरी तरह बदलना होगा। इसके अलावा, बैटरी की क्षमता, उड़ान की दूरी, मौसम का प्रभाव, शोर, रखरखाव और यात्रियों की सुरक्षा भी बड़ी चुनौतियां हैं। कम दूरी की इलेक्ट्रिक उड़ान संभव बनाने वाली तकनीक अपने आप में यह गारंटी नहीं देती कि वह हर मौसम में सुरक्षित और किफायती सेवा दे सकेगी।



अमरिका में बनी जॉबी एविएशन का एस4

खत्म नहीं होंगे पारंपरिक वाहन

उड़न कारों के बारे में सोचते हुए एक यह सवाल भी जेहन में आता है कि क्या उड़ने वाली कारों के आने के बाद रेल, मेट्रो, बसें और सामान्य कारें अप्रासंगिक हो जाएंगी? इसकी संभावना बिल्कुल नहीं है, क्योंकि इतिहास गवाह है कि परिवहन के इतिहास में नए साधन पुराने साधनों को पूरी तरह समाप्त नहीं करते बल्कि उनकी भूमिका बदलते हैं। विमान आने के बाद रेल खत्म नहीं हुई, मेट्रो के विस्तार से बसों की जरूरत समाप्त नहीं हुई। उसी तरह उड़ने वाली कारें भी पहले उन यात्राओं में जगह बना सकती हैं, जहां समय की कीमत अधिक है और यात्रियों की संख्या सीमित है। मेट्रो और रेल बड़ी संख्या में यात्रियों को कम ऊर्जा और कम जगह में ले जाने में सक्षम हैं। बसें स्थानीय संपर्क प्रदान करती हैं, जबकि निजी कारें घर से गंतव्य तक लचीली यात्रा का विकल्प देती हैं।

भविष्य में ऐसा हो सकता है

एक यात्री घर से इलेक्ट्रिक कार में मेट्रो स्टेशन तक पहुंचे, लंबी दूरी ट्रेन से तय करें और अंतिम चरण में हवाई टैक्सी का इस्तेमाल करे, ऐसी एकीकृत व्यवस्था अधिक यथार्थवादी है। इस तरह उड़ती हुई कारों का भविष्य केवल इस बात से तय नहीं होगा कि कोई वाहन हवा में उठ सकता है या नहीं। असली प्रश्न यह होगा कि क्या वह आम आदमी की जरूरतों के अनुकूल सुरक्षित, विश्वसनीय, किफायती और पर्यावरण की दृष्टि से बेहतर विकल्प बन सकता है। हालांकि, उस भविष्य में सबसे महत्वपूर्ण वाहन शायद वह नहीं होगा जो सबसे ऊंचा उड़ता है बल्कि वह होगा जो लोगों को सबसे सुरक्षित, सुलभ और कम खर्च में उनकी मंजिल तक पहुंचाता है। *



कई देशों में हो रहे प्रयास

भले आज अमेरिका, चीन, जापान, जर्मनी, ब्रिटेन और नीदरलैंड सहित कई देशों में अलग-अलग तरह के उड़ने वाले वाहन विकसित हो रहे हों। अमेरिका में जॉबी एविएशन का एस4 और आर्चर एविएशन का मिडनाइट जैसे विमान हवाई टैक्सी के लिए तैयार किए जा रहे हैं। चीन की ईहैंग अपने ईएच216-एस जैसे बिना पायलट वाले यात्री विमान के कारण उल्लेखनीय बढ़त रखती है। जापान की स्काईड्राइव और चीन की एक्सपेंग एरॉएचटी सड़क और आसमान के बीच संबंध बनाने वाली अलग अवधारणाओं पर काम कर रही हैं। मगर यहां एक महत्वपूर्ण अंतर है। तकनीकी प्रोटोटाइप उड़ाना, विमान का नियामकीय प्रमाणन प्राप्त करना और नियमित व्यावसायिक यात्री सेवा शुरू करना तीन अलग-अलग पड़ाव हैं। चीन का ईएच216-एस प्रमाणन और सीमित सेवाओं के मामले में आगे है, जबकि अमेरिका में जॉबी जैसे खिलाड़ी पायलट वाले विमानों के प्रमाणन की दिशा में तेजी से बढ़ रहे हैं। इसलिए किसी एक देश को सभी तरह की उड़ने वाली कारों का निर्विवाद विजेता कहना अभी सही नहीं होगा।

अब रोबोट करेंगे सर्जरी !

अभी तक इंसानी डॉक्टर की मदद से रोबोटिक सर्जरी हुआ करती थी। लेकिन अब इंसानी डॉक्टर से दूर रहकर रोबोटिक सर्जरी को अंजाम देने की दिशा में कदम आगे बढ़ गए हैं। यह देखना दिलचस्प होगा, आने वाले समय में मेडिकल साइंस में रोबोट की भूमिका और कितनी बढ़ती है?



{ टेक्नोट्रीटमेंट / वीरेंद्र बहादुर सिंह }

मेडिकल क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और रोबोटिक्स का इस्तेमाल तेजी से बढ़ रहा है। आज भारत में भी घुटने और कूल्हे के जॉइंट रिप्लेसमेंट से लेकर कई तरह की छोटी-बड़ी सर्जरी रोबोटिक तकनीक की मदद से की जाने लगी हैं। हालांकि इन ऑपरेशनों में रोबोट अपने आप सर्जरी नहीं करता। अनुभवी और कुशल डॉक्टर ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रहते हैं और रोबोटिक उपकरणों की मदद से पूरी प्रक्रिया को नियंत्रित करते हैं। लेकिन अमेरिका में हाल ही में हुए एक प्रयोग ने भविष्य की मेडिकल सर्जरी की संभावनाओं को एक कदम और आगे बढ़ा दिया है।

दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने की सर्जरी: अमेरिका की यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया में एक ऐसा प्रयोग किया गया, जिसमें दो ह्यूमनॉइड रोबोट ने एक जीवित मरीज पर सर्जरी की। इस दौरान गॉल-ब्लैडर यानी पित्ताशय को शरीर से अलग किया गया। ऑपरेशन में चीरा लगाना, लिवर से पित्ताशय को अलग करना और अंत में टांके लगाने जैसी प्रक्रियाएं रोबोट ने पूरी कीं।

यह दावा सुनने में बेहद रोमांचक है कि रोबोट ने स्वयं ऑपरेशन कर दिया, लेकिन इस प्रयोग की वास्तविकता को समझना जरूरी है। पहली बात यह कि मरीज इंसान नहीं, बल्कि एक पशु था। दूसरी और सबसे महत्वपूर्ण बात यह कि प्रशिक्षित मानव डॉक्टर पूरी प्रक्रिया के दौरान मौजूद थे। वे ऑपरेशन थिएटर से दूर बैठकर टेली ऑपरेशन तकनीक के माध्यम से रोबोट को नियंत्रित कर रहे थे। फिर भी मेडिकल साइंस के लिए यह प्रयोग बेहद महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका उद्देश्य यह पता लगाना था कि क्या भविष्य में ह्यूमनॉइड रोबोट डॉक्टर की प्रत्यक्ष मौजूदगी के बिना भी जटिल सर्जरी कर सकते हैं?

नॉर्मल रोबोट ने किया ऑपरेशन: इस प्रयोग की एक और खासियत थी। इसके लिए कोई विशेष सर्जिकल रोबोट तैयार नहीं किया गया था। इसके बजाय दो नॉर्मल ह्यूमनॉइड रोबोट का इस्तेमाल किया गया। इन रोबोट में कई तरह के जोड़ थे और उनके हाथों में अंगूठे तथा अंगुलियों जैसी कार्यक्षमता थी। इसलिए वे अपने हाथों में अलग-अलग सर्जिकल उपकरण पकड़कर उनका इस्तेमाल कर सकते थे। इनमें श्रीडी लाइडार और डेप्थ कैमरा जैसी तकनीक भी लगी थी। इससे रोबोट अपने सामने मौजूद वस्तुओं की स्थिति और गहराई को समझ सकते थे। यही क्षमता सर्जरी जैसे अत्यंत संवेदनशील काम में महत्वपूर्ण हो जाती है। यह प्रयोग इस बात का संकेत है कि भविष्य की सर्जरी में केवल रोबोटिक मशीनें ही नहीं, बल्कि एआई, कंप्यूटर विजन और रोबोटिक्स का संयुक्त इस्तेमाल निर्णायक भूमिका निभा सकता है।

भारत में हो चुका है ऐसा प्रयोग: रोबोटिक सर्जरी की यह कहानी भारत के लिए पूरी तरह नई नहीं है। करीब आठ वर्ष पहले गुजरात में ऐसा प्रयोग हो चुका है, जिसमें डॉक्टर ने मरीज से कई किलोमीटर दूर बैठकर टेलीरोबोटिक तकनीक से सफलतापूर्वक हृदय की सर्जिकल प्रक्रिया की थी।

पद्मश्री से सम्मानित हृदय रोग विशेषज्ञ डा. तेजस पटेल ने 2018 में अहमदाबाद स्थित अस्पताल में भर्ती एक महिला मरीज के हृदय की प्रक्रिया को दूर बैठकर नियंत्रित किया था। उस समय डॉक्टर स्वयं अस्पताल से लगभग 30-32 किलोमीटर दूर गांधीनगर में थे। मरीज को कुछ दिन पहले ही हृदयाघात हुआ था। इसके बावजूद उसने दुनिया में इस तरह की पहली प्रक्रियाओं में से एक के लिए सहमति दी। यह प्रयोग इसलिए ऐतिहासिक था क्योंकि डॉक्टर और मरीज के बीच कई किलोमीटर की दूरी होने के बावजूद रोबोटिक सिस्टम और हाईस्पीड इंटरनेट की मदद से डॉक्टर मरीज की प्रक्रिया को नियंत्रित कर सके।



कैसे होती है टेलीरोबोटिक सर्जरी: इस तरह की रोबोटिक प्रणाली मुख्य रूप से तीन हिस्सों में काम करती है। पहला हिस्सा अस्पताल के ऑपरेशन थिएटर में मौजूद रोबोटिक आर्म होता है, जो कैथलैब जैसी व्यवस्था के साथ जुड़ा रहता है और मरीज के शरीर में वास्तविक प्रक्रिया करता है। दूसरे हिस्से में एक बदली जा सकने वाली कैसेट होती है। इसमें प्रक्रिया के लिए जरूरी क्लिनिकल सामग्री और उपकरण व्यवस्थित रहते हैं। तीसरा हिस्सा डॉक्टर के लिए बनी कॉकपिट जैसी व्यवस्था होती है। डॉक्टर इसमें बैठकर गेमिंग के जॉयस्टिक जैसे नियंत्रण उपकरणों की मदद से रोबोटिक आर्म को संचालित करता है।

सबसे खास बात यह है कि यह कॉकपिट, ऑपरेशन थिएटर से काफी दूर भी हो सकती है।

सवाल भी है बरकरार: रोबोटिक सर्जरी को लेकर अकसर यह सवाल उठता है कि क्या भविष्य में रोबोट, डॉक्टरों की जगह ले लेंगे? फिलहाल ऐसा कहना जल्दबाजी होगी। सर्जरी केवल हाथों की सटीक गतिविधियों का नाम नहीं है। मरीज की स्थिति को समझना, अचानक पैदा होने वाली जटिलताओं का आकलन करना, निर्णय लेना और किसी अप्रत्याशित परिस्थिति में तुरंत रणनीति बदलना, इन सबमें मानवीय विशेषज्ञता महत्वपूर्ण है।

लेकिन तस्वीर का दूसरा पहलू भी उतना ही दिलचस्प है। अगर एआई रोबोट को देखने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता में लगातार बेहतर बनाता है और रोबोटिक तकनीक हाथों की अत्यंत सूक्ष्म गतिविधियों को अधिक सटीक बनाती है, तो डॉक्टर और रोबोट का यह गठजोड़ चिकित्सा क्षेत्र को पूरी तरह बदल सकता है। *



{ दोहे / केदार शर्मा }

पूर्ण चंद्रमा शरद का

दीप्त रजत-सी ओढ़नी, उजली पाखी रात।
पूर्ण चंद्र से शरद ऋतु, हंस-हंस करती बात।।
चटक चमक चक चांदनी, चंचल चित चकोर।
होले-होले हवा हंस, हुलराती हर ओर।।
षोडस अंशों युक्त है, मादकमय मुस्कान।
सम्मोहनमय मौन में, डूबा सकल जहान।।
कानन उपवन दमकते, नहा चांदनी संग।
नदी सरोवर बदलते, धवल वसन सम रंग।।
क्षीरसिंधु सुत क्षीर-सा, शीतलता सब ओर।
मंद-मंद मुस्कान में, मिला मधुर मन-मोर।।
पूर्ण चंद्रमा शरद का, बदले सब हालात।
कुदरत जैसे बांटती, कोई नई सौगात।।
पर्वों की आहट हुई, सर्दी की पदचाप।
उधर गुलाबी ठंड भी, बदन रही है नाप।।
बदली-बदली सी फिजां, बदल रहे हालात।
दिन की घड़ियां भी घटीं, और फैलती रात।।



{ पुस्तक अंश / सूर्यबाला }

कई प्रतिष्ठित सम्मानों से विभूषित वरिष्ठ साहित्यकार सूर्यबाला की आत्मकथात्मक संस्मरणों की पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' हाल में प्रकाशित होकर आई है। अपनी स्मृति की वीथियों से गुजरते हुए उन्होंने बहुत साधारण सी लगने वाली घटनाओं में व्याप्त असाधारण सौंदर्य और विमर्श को व्यक्त किया है। आज उनके जन्मदिन के अवसर पर प्रस्तुत है, इसी पुस्तक का एक संपादित अंश।

युवती वधुओं से एक गुहार

मनोविज्ञान कभी मेरा विषय नहीं रहा लेकिन मेरी 'मेरा विद्रोह', 'सुनंदा छोकरी की डायरी', 'सांझवाती' और 'निर्वासित' जैसी कहानियां पढ़कर लोग अकसर प्रश्न करते हैं, 'आप बच्चों और बूढ़ों के मनों को कैसे इतनी बारीकी से पढ़ पाती हैं?...तो मैं ही नहीं शायद हर रचनाकार जन्मजात मनोविज्ञानी होता है। यह मनोविज्ञान लेखन ही नहीं, जीवन में भी आई परिस्थितियों और चरित्रों से निर्वाह कर ले जाने की तरकीबें निकाल सकता है। मैंने इसी की मदद से श्वसुरालय के ग्राम्यांचल से जुड़े लोगों की मन, प्रकृति और समझ बांच ली थी। ये बेशक पुरानी और रीति-रिवाजों की लकीर पीटने वाले गलत परंपराओं, अंधविश्वासों को भी सही समझने वाले लोग हैं लेकिन मन के कुटिल नहीं। ये ऊपर से अड़ियल हैं, रूढ़ परंपराओं से अलग होने का उनमें भय व्यापता हैं, और वे असुरक्षित महसूस करते हैं लेकिन अंदर से सीधे, भोले और अपनेपन की अकूत मिल्कियत के मालिक हैं। उन्होंने जीवन में सदा अपना-पराया, तेरा-मेरा अलगा-गुजारी और थोड़ी-थोड़ी चीजों पर लड़ना, अड़ना ही देखा होता है। एक-दूसरे के खिलाफ अपने पतियों को भड़काती स्त्रियां, प्रायः हर विवाहित पुत्र, रात-दिन मां से पत्नी के विरुद्ध और पत्नी से उसकी मां के खिलाफ शिकायतों की अनवरत और अंधाधुंध कलह कोलाहल भरी शिकायतें सुनते-सुनते खब्त हो गया होता है। मुझे लेकर भी इस मां की, इस परिवार की कुछ वैसी ही रूढ़ धारणाएं बनी होंगी उसे संभालने में, उनकी धारणा बदलने में समय तो लगना ही था।

विश्व की प्रकृति प्रदत्त दुर्भाग्यपूर्ण विडंबनाओं में एक है, सास-बहू की परस्पर तनातनी वास्तव में यह एक ही 'पुरुष' पर अपना एकनिष्ठ वर्चस्व चाहने वाली उसके जीवन की दो अतिप्रिय स्त्रियों के क्लेश हैं क्योंकि वह दोनों का प्रिय है दोनों स्त्रियां उस पर अपना पूरा आधिपत्य चाहती हैं। पहली ने जिस बच्चे को जन्म दिया, शिशुपन से उसके सारे दुःख-सुख की साक्षी रही, एक ही रात में उस मां को एक-दूसरी युवती स्त्री द्वारा उसके पद से अपदस्थ कर दिया जाता है। (अनजाने ही सही) लेकिन बचपन से युवा होने तक जिसकी नींद सोयी, जिसकी नींद उठी, ऐसी मां और बेटे के निकटतम रक्त-संबंध के बावजूद, यह अपदस्थ मां, अपने 'दोनों बच्चों' (पुत्र-पुत्रवधु) से एक समझदार, सम्मानजनक व्यवहार, रिश्ता और निश्छल प्यार पा कर अति प्रसन्न और तृप्त भी हो सकती है, यह कोई युवती बहू शायद ही समझती हो। कम से कम प्रयोग के तौर पर ही, नाममात्र को ही, यदि वह पहले की तरह उस मां को घर की सम्राज्ञी, उसके बेटे की 'वही मां' बनी रहने का 'भरम' बनाये रख सके तो सीधे-सीधे सिर्फ भारत ही नहीं, विश्व की एक बड़ी मनोवैज्ञानिक समस्या छूमंतर हो सकती है। लेकिन इतना तक भी धैर्य कहां हो पाता है। न हमारी युवती वधुओं में! न परिपक्ववय वाली मां में ही प्रायः खलनायिकत्व अपनाने से बाज न आती वधुरानी को भी सीधे-सीधे, संपूर्ण प्रभुत्व, पर्याप्त स्पेस और स्वछंद स्वतंत्रता चाहिए होती है। तो लुटी-पिटी, हारी-खिसियानी हजार पूर्वाग्रहों से ग्रस्त, मां जो तमाम गलत धारणाओं की शिकार पहले से ही होती हैं, उनकी धारणा का रंग पक्का होता जाता है। मैंने इन्हीं दो गहरी खाइयों के बीच सेतुबंध का एक प्रयोग सा किया था जो सफल रहा और पूरे कुटुंब में तीन पीढ़ियों तक जीवन और संबंधों की समरसता कायम रही। सच तो यह है कि परिवार और रिश्तों से जुड़ी स्थितियों को सिर्फ 'घरेलू' मानकर न मुंह बिचकाया जा सकता है, न उन्हें टरकाया जा सकता है। थोड़े-बहुत उलटफेर के साथ कॉर्पोरेट और कारोबारी संस्थानों में जटिल रिलेशनशिप को साधने में काम आने वाली तरकीबों और फॉर्मूलों से ही इस मसले को भी हल किया जा सकता है। शर्त सिर्फ एक, इसे घरेलू समझ कर हल्के से न लिया जाए। *



(वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'डिप सा'ब की तीसरी बेटी' से साभार)

विज्ञापन...

इंजेक्शन की नवीन तकनीक से स्पाइन रोगों का उपचार

नोट : वरिष्ठ नागरिकों (60 वर्ष के ऊपर) का उपचार मात्र 12 हजार रुपए में

सर्जरी के बिना ही सिर्फ इंजेक्शन तकनीक के जरिये स्पाइन (रीढ़) रोगों का बेहतर और विश्वसनीय उपचार ग्वालियर में हो रहा है इस तकनीक के असाधारण लाभ-

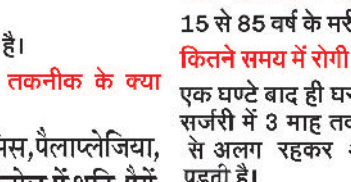

केन्द्रीय मंत्री श्रीमंत ज्योतिरादित्य सिंधिया जी से स्पाइन के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए डॉ. प्रमोद पहारिया अवार्ड प्राप्त करते हुए।

स्टेनोसिस, स्पॉन्डिलाइटिस आदि में कारगर है।

जो रोगी ऑपरेशन करवा चुके हैं उसमें भी यह कारगर है ?

यदि ऑपरेशन के बाद दबाव बना रहता या दोबारा दबाव आ जाता है तो उसमें भी यह तकनीकी कारगर है।

इस ट्रीटमेंट की कितनी बार आवश्यकता होती है?
सिर्फ एक ही बार पर्याप्त है।

सर्जरी की अपेक्षा इस तकनीक के क्या फायदे हैं?
सर्जरी के बाद पैरालिसिस, पैलाप्लेजिया, ब्लैडर एंव बोवेल के कंट्रोल में क्षति, पैरों में कमजोरी, इंफेक्शन, इंप्लाट फैलियर जैसे कॉम्पिलकेशन इसमें नही है।

किन मरीजों का इलाज इस तकनीक से संभव है?
डिस्क प्रोलेप्स जैसे L4-L5, L5-S1, साइटिका, लंबर या सर्वाइकल रेडीक्युलोपैथी, डिजरनेरेटिव डिस्क, फैसिट जॉइन्ट सिंड्रोम, माइलोपैथी, लंबर कैनाल

किस उम्र के लिये यह चिकित्सा है?
15 से 85 वर्ष के मरीजों के लिये।

कितने समय में रोगी घर जा सकता है?
एक घण्टे बाद ही घर जा सकता है। जबकि सर्जरी में 3 माह तक रोगी को अपने काम से अलग रहकर आर्थिक क्षति उठाना पड़ती है।

इस ट्रीटमेंट की सफलता की दर कितनी है?
90 से 95% सफल है।

इस ट्रीटमेंट का असर कब तक रहता है?
इसमें जड़ से इलाज होता है।

क्या यह स्टेरॉइड इंजेक्शन है?
नहीं, यह एक भ्रम है। यह एक सेफ अमेरिकन प्रोसीजर है, जो एक विशेष मशीन की निगरानी में किया जाता है।

NBC@

डॉ. प्रमोद पहारिया
स्पाइन सर्जन
MBBS, D.Ortho, DNB, M.Ch. (Ortho)
पूर्व सर्जन- सर गंगाराम हॉस्पिटल एवं इंडियन स्पाइनल इंज्यूरी सेन्टर, नई दिल्ली

ओल्ड श्री टॉकीज, बारादरी, मुरार, ग्वालियर (म.प्र.)
समय: दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक
व्हाट्सएप पर रिपोर्ट भेजकर ही संपर्क करें
सम्पर्क – 7354858466



चित्तौड़गढ़ मीरा महोत्सव-2026

शौर्य की फिजा में महकती भक्ति

इतिहास में राजपूताना वीरगाथाओं से समृद्ध प्रदेश राजस्थान के चित्तौड़गढ़ में आज और कल आयोजित हो रहे मीरा महोत्सव में भक्ति की बयार की अनुभूति आप कर सकते हैं। यह महोत्सव न केवल राजस्थान के इतिहास बल्कि वहां की कला, संगीत, संस्कृति से रूबरू होने का अवसर भी प्रदान करती है। इस महोत्सव की विशिष्टताओं पर एक नजर।

सांस्कृतिक आयोजन
वीना गौतम

कुछ जगहें ऐसी होती हैं, जहां घूमने का अर्थ केवल खूबसूरत इमारतों को देखना, तस्वीरें खींचना और रास्ते में स्थानीय व्यंजनों का स्वाद लेना भर नहीं होता। वहां की मिट्टी, हवा और पत्थर भी कोई कहानी सुनाते हैं। राजस्थान का चित्तौड़गढ़ ऐसी ही जगह है। यहां दुर्ग की ऊंची प्राचीरें शौर्य और बलिदान की गाथाएं कहती हैं, विजय स्तंभ इतिहास की विराटता का अहसास कराता है और इन्हीं ऐतिहासिक दीवारों के बीच स्थित मीरा मंदिर प्रेम, समर्पण और आत्मिक स्वतंत्रता की एक बिल्कुल अलग दुनिया में ले जाता है। आज 25 और कल 26 अक्टूबर 2026 को आयोजित हो रहा मीरा महोत्सव ऐसा ही एक खास अवसर है।

संगीत-परंपरा की अनुभूति : राजस्थान पर्यटन के अनुसार इस दो दिवसीय आयोजन में मीरा की भक्ति, कविता, संगीत और राजस्थान की लोकपरंपराओं को केंद्र में रखा जाएगा। ऐसे में यह सफर केवल एक ऐतिहासिक शहर की सैर नहीं बल्कि उस प्रेम स्वरूपा महाभक्त मीरा को समझने का अवसर भी है, जिसने राजमहलों की मर्यादाओं के बीच अपने मन की स्वतंत्रता और कृष्ण के प्रति अपनी अनन्य भक्ति को चुना।

बहती है मीरा की भक्ति धारा: चित्तौड़गढ़ का नाम आते ही रानी पद्मिनी, महाराणा कुंभा, महाराणा सांगा और राजपूताना के शौर्य की स्मृतियां सामने आ जाती हैं। लेकिन इस शहर की सांस्कृतिक पहचान का एक दूसरा पक्ष भी है, जो तलवार की चमक से नहीं, वीणा की धुन और भक्ति के स्वर से उजागर होता है। मीरा इसी पक्ष की प्रतिनिधि हैं। सोलहवीं सदी की भक्त-कवयित्री मीराबाई का जीवन कृष्ण के प्रति उनकी अनन्य आस्था और सामाजिक रूढ़ियों से टकराने के लिए याद किया जाता है। उनके पदों में प्रेम है, विरह है, प्रतीक्षा है और अपने आराध्य के प्रति ऐसा समर्पण है, जो किसी एक काल या क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा। उनकी कविता मंदिरों से निकलकर लोकगीतों, शास्त्रीय संगीत, भजन मंडलियों और आम लोगों की स्मृतियों में पहुंची। मीरा महोत्सव के दौरान भक्ति संगीत, काव्य और लोककलाओं के कार्यक्रम इस विरासत को नए सिरे से महसूस करने का अवसर देंगे।



पद्मिनी महल से गौमुख कुंड

ऐतिहासिक मीरा दुर्ग का दीदार: चित्तौड़गढ़ की यात्रा का सबसे प्रभावशाली पड़ाव है इसका विशाल दुर्ग। लगभग 180 मीटर ऊंची पहाड़ी पर स्थित यह ऐतिहासिक परिसर दूर से ही अपने विस्तार और भव्यता से आकर्षित करता है। इसकी लंबी चढ़ाई, प्रवेशद्वार और भीतर फैले स्मारक, आगंतुकों को धीरे-धीरे उस दौर में ले जाते हैं, जब मेवाड़ की राजनीतिक और सांस्कृतिक पहचान इसी दुर्ग से आकार लेती थी। इसकी प्राचीरों पर खड़े होकर आस-पास के भू-भाग को देखना अपने आपमें एक अनुभव है। यहां इतिहास किसी बंद संग्रहालय में रखी वस्तु की तरह नहीं बल्कि खुले आकाश के नीचे फैले परिदृश्य की तरह सामने आता है। समय ने कई इमारतों को क्षतिग्रस्त किया, लेकिन उनके अवशेष आज भी सत्ता, संघर्ष, कला और स्मृति की परतें खोलते हैं। विजय स्तंभ इसकी पहचान का प्रमुख हिस्सा है। इसकी बारीकियों को देखते हुए समझ आता है कि मध्यकालीन भारत में स्मारक केवल विजय का प्रतीक नहीं बल्कि शिल्पकला और सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के माध्यम भी थे।

आकर्षक मीरा मंदिर: इसी दुर्ग के भीतर मीरा मंदिर पहुंचकर यात्रा का स्वर बदल जाता है। यहां राजसी वैभव और युद्धों की



मीरा मंदिर

स्मृतियों के बीच भक्ति की एक शांत दुनिया दिखाई देती है। मंदिर की स्थापत्य शैली, नक्काशी और परिसर का वातावरण पर्यटकों को कुछ देर ठहरने के लिए बाध्य करता है। यहां पहुंचकर मीरा के पदों को याद करना इस यात्रा को और अर्थपूर्ण बना सकता है। उनके काव्य में कृष्ण केवल आराध्य नहीं, बल्कि आत्मीय संवाद के साथी हैं। मीरा का प्रेम किसी सांसारिक उपलब्धि की आकांक्षा नहीं रखता, वह अपने विश्वास के साथ जीने की स्वतंत्रता का भी प्रतीक है। यही कारण है कि सदियों बाद भी उनकी कविता अलग-अलग भाषाओं और पीढ़ियों के लोगों को छूती है। मीरा मंदिर में कुछ समय शांत बैठकर आसपास के स्थापत्य को देखकर कल्पना कर सकते हैं कि कैसे किसी कवयित्री की निजी अनुभूति धीरे-धीरे सामूहिक सांस्कृतिक विरासत बन जाती है। पर्यटन का असली आनंद शायद इसी बिंदु पर मिलता है, जब कोई जगह केवल देखने की वस्तु नहीं रहती, बल्कि भीतर कुछ बदलने का अवसर बन जाती है।

ये स्थल भी हैं दर्शनीय: जब आप मीरा महोत्सव में शामिल होने के लिए चित्तौड़गढ़ जाएं तो यहां स्थित कई और स्थलों को देख सकते हैं। रानी पद्मिनी का महल, राणा कुंभा का महल, गौमुख कुंड और कालिका माता मंदिर जैसे स्थल, इतिहास तथा स्थापत्य के अलग-अलग रूप सामने लाते हैं। पद्मिनी महल का परिसर और उसके आस-पास का जलाशय दुर्ग के दृश्यात्मक आकर्षण को बढ़ाते हैं, जबकि राणा कुंभा का महल, मेवाड़ की राजसी विरासत को समझने का अवसर देता है। गौमुख कुंड पर पहुंचकर कुछ देर ठहरना अविस्मरणीय अनुभव हो सकता है। चट्टान से निकलकर कुंड में पहुंचते जलस्रोत का दृश्य प्रकृति और आस्था के पुराने संबंध की याद दिलाता है। दुर्ग के भीतर जैन मंदिर भी हैं, जिनकी बारीक नक्काशी और स्थापत्य विविधता इस क्षेत्र की बहुधार्मिक सांस्कृतिक विरासत का परिचय देती है। *

इसे भी करें एंज्वॉय

चित्तौड़गढ़ की यात्रा में राजस्थानी खान-पान का स्वाद भी शामिल होना चाहिए। दाल-बाटी-चूरमा, गट्टे की सब्जी और स्थानीय शैली में तैयार पारंपरिक व्यंजन भोजन को यात्रा का यादगार हिस्सा बना सकते हैं। स्थानीय बाजारों में हस्तशिल्प, पारंपरिक कपड़े और क्षेत्रीय कलाकृतियां देखी, खरीदी जा सकती हैं।

बेहतर और सफल जीवन जीने के लिए सबको बदलने के बजाय खुद को समझिए और जरूरी बदलाव कीजिए। इससे आप मनचाही सफलता तो पाएंगे ही, जीवन में सार्थकता भी आएगी।

दुनिया को नहीं खुद को बदलिए

सेल्फ मोटिवेशन
शिखर चंद जैन



अधिकतर लोग अकसर इसलिए परेशान रहते हैं कि ये दुनिया वैसी क्यों नहीं है, जैसी वे चाहते हैं? सच कहा जाए तो उनकी परेशानी का मूल ही यही सोच है। सुकून, समृद्धि और सफलता के लिए असल में जरूरत होती है खुद को बदलने की।

व्यर्थ न करें मानसिक ऊर्जा: दूसरों को बदलने की कोशिश में अपनी ऊर्जा बर्बाद मत कीजिए। हमारे तनाव का बड़ा हिस्सा अकसर उन चीजों से आता है, जो हमारे नियंत्रण में हैं ही नहीं। कोई हमारे बारे में क्या सोचता है, किसने हमें फोन नहीं किया, किसी ने हमारी बात क्यों नहीं मानी या किसी ने हमारे साथ वैसा व्यवहार क्यों नहीं किया जैसा हम चाहते थे? इन सवालों में मानसिक ऊर्जा खपती है। 'लेट देम' थ्योरी इसी प्रवृत्ति से बाहर निकलने का एक सरल तरीका है। किसी के व्यवहार से परेशान हों तो तुरंत प्रतिक्रिया देने के बजाय खुद से पूछें, 'क्या यह मेरे नियंत्रण में है?' यदि जवाब 'नहीं' है तो अपनी ऊर्जा बचाइए।

समझें समय का सही उपयोग: समय बचाने से पहले यह तय कीजिए कि समय किसके लिए चाहिए? आज समय प्रबंधन पर हजारों तकनीकें उपलब्ध हैं, लेकिन हमारी टू-डू लिस्ट फिर भी खत्म नहीं होती। याद रखिए, हमारे पास हर काम करने के लिए अनंत समय नहीं है, इसलिए हर अवसर स्वीकार करना और हर काम पूरा करना संभव नहीं। इसका सीधा अर्थ है, प्राथमिकताएं तय करनी होंगी। जिस काम के लिए समय नहीं है, उसे 'नहीं' कहना भी समय प्रबंधन है।



लोगों की परवाह छोड़िए: 'लोग क्या कहेंगे' जैसे डायलॉग को जिंदगी का कंट्रोलर मत बनने दीजिए। समाज की राय जरूरी हो सकती है, लेकिन यदि हर निर्णय इसी डर से लिया जाए कि दूसरे क्या सोचेंगे तो धीरे-धीरे अपनी पसंद, पहचान और इच्छा दबने लगती है। आपका काम, आदतें, स्वभाव हर व्यक्ति को पसंद आना संभव भी नहीं, जरूरी भी नहीं। यदि हर टिप्पणी आपके फैसले बदलने लगे तो जीवन आपका होकर भी आपका नहीं रहेगा। दूसरों का सम्मान कीजिए, पर अपनी जिंदगी का नियंत्रण उनके हाथ में मत दीजिए।

दिमाग पर हावी न हो मोबाइल: आधुनिक जीवन की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि जो उपकरण हमें दुनिया से जोड़ने के लिए बना था, वही हमारा ध्यान सबसे ज्यादा भंग कर रहा है। हर कुछ मिनट में फोन देखना, रील बदलना, नोटिफिकेशन जांचना और बिना उद्देश्य स्क्रॉल करना एक आदत सी बन गई है। समाधान तकनीक को त्यागना नहीं, बल्कि उसकी सीमा तय करना है। सुबह उठते ही फोन न देखना, भोजन के समय उसे दूर रखना और सोने से पहले कुछ समय स्क्रीन-मुक्त रखना छोटे लेकिन प्रभावी कदम हो सकते हैं। डिजिटल अनुशासन आज की नई जीवनशैली का अनिवार्य हिस्सा है।

रिश्तों में बातचीत जरूरी: हमारी कई पारिवारिक और व्यक्तिगत समस्याएं वास्तविक घटना से ज्यादा उसके बारे में बनाए गए अनुमान से पैदा होती हैं। किसी ने देर से जवाब दिया तो हमने मान लिया कि वह नाराज है। किसी ने कम बात की तो मान लिया कि रिश्ता खराब हो गया। इसके बजाय सीधे संवाद करना बेहतर है। आरोप लगाने के बजाय सवाल पूछिए, प्रतिक्रिया देने से पहले सामने वाले की बात सुनिए। रिश्तों में हर बात पर सहमत होना जरूरी नहीं, लेकिन असहमति के बीच सम्मान बचा रहना जरूरी है। अच्छा रिश्ता वह नहीं, जिसमें कभी झगड़ा न हो, अच्छा रिश्ता वह है, जिसमें झगड़े के बाद बातचीत का दरवाजा बंद न हो।

मुझसे नहीं होगा सोचना ठीक नहीं: कई क्षमताएं अभ्यास और सीखने से विकसित हो सकती हैं। उम्र, पिछली असफलता या पुरानी पहचान को भविष्य की अंतिम सीमा मान लेना जरूरी नहीं। जिसने कभी मंच पर भाषण नहीं दिया, वह अभ्यास से वक्ता बन सकता है। जिसने कभी नहीं लिखा, वह लिखना सीख सकता है। जिसने तकनीक से दूरी बनाई है, वह धीरे-धीरे डिजिटल कौशल हासिल कर सकता है।

व्यस्त नहीं एकाग्र रहें: एक साथ कई काम करने की हमारी आदत वास्तव में कई बार सारे कामों की गुणवत्ता कम कर देती है। लगातार आने वाले संदेश, ई-मेल और नोटिफिकेशन दिमाग को एक काम से दूसरे काम की ओर खींचते रहते हैं। इसलिए रोज कुछ समय एक महत्वपूर्ण काम के लिए बिना व्यवधान के निर्धारित करना उपयोगी है। तीस मिनट के कंसंट्रेशन टास्क से शुरुआत कीजिए। मोबाइल दूर रखिए, अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद कीजिए। *

प्रिकॉशन
शैलेंद्र सिंह

इन दिनों यंगस्टर्स में ईयरफोन से म्यूजिक सुनने की हैबिट बहुत तेजी से बढ़ रही है। लेकिन असावधानी बरतने पर इससे सुनने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। विश्व श्रवण दिवस (27 अक्टूबर) पर जानिए उपयोगी बातें।

हार्मफुल हो सकती है ईयरफोन की दीवानगी





बस-मेट्रो में सफर करता युवा, अपनी गाड़ी में बैठकर ऑफिस जा रहा प्रोफेशनल हो, सड़क पर पैदल चलता किशोर, जिम में पसीना बहाता यंगस्टर या रात को बिस्तर पर लेटा विद्यार्थी, इन सबके बीच इन दिनों जो हैबिट तेजी से पॉपुलर हुई है, वह है- कानों में ईयरफोन लगाए रहना। म्यूजिक, पॉडकॉस्ट, वीडियो और ऑनलाइन बातचीत की दुनिया अब इतनी निजी हो गई है कि आस-पास की आवाजें कई बार हमारे लिए गैर जरूरी हो जाती हैं। लेकिन इस निजी दुनिया का एक खतरा भी है। जिस पर हम अकसर तब तक ध्यान नहीं देते, जब तक सुनाई देने वाली आवाजें धीमी नहीं पड़ने लगतीं।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की चेतावनी: डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया भर में 12 से 35 वर्ष के 1 अरब से ज्यादा युवाओं को मनोरंजन के दौरान तेज आवाज के असुरक्षित संपर्क के कारण सुनने की क्षमता प्रभावित होने का खतरा रहता है। इसमें व्यक्तिगत ऑडियो, उपकरणों पर तेज आवाज में संगीत सुनना और मनोरंजन स्थलों पर अधिक शोर शामिल है।

स्मार्टफोन और म्यूजिक: पहले संगीत सुनने के लिए हम रेडियो, टेप रिकॉर्डर या म्यूजिक सिस्टम का सहारा लेते थे। लेकिन अब कुछ सेकेंड में ही हम अपने मनपसंद गाने सुन सकते हैं। यह सुविधा उपलब्ध कराई है, हमारी जेब में मौजूद रहने वाले स्मार्टफोन ने। यात्रा के दौरान, पढ़ाई करते समय, व्यायाम के वक्त और कई बार सोने से पहले तक हमारे विशेषकर युवाओं के कानों में ईयरफोन लगे रहते हैं। जिन कोशिकाओं की मदद से ध्वनि के संकेत हमारे मस्तिष्क तक पहुंचते हैं, वे कोशिकाएं लगातार डिजिटल संगीत के संपर्क में रहने के कारण क्षतिग्रस्त होने लगती है। इससे सुनने की क्षमता प्रभावित होने लगती है।

खतरा केवल तीव्रता में नहीं: जोखिम तय करने में तीन बातें अहम है- आवाज कितनी तेज है, वह कितनी देर तक सुनी जा रही है और ऐसा कितनी बार होता है। डब्ल्यूएचओ के मुताबिक श्रवण संबंधी सुरक्षित दिशा-निर्देशों के तहत औसतन 80 डेसिबल की ध्वनि के संपर्क में एक सप्ताह में 40 घंटे तक रहने से वयस्कों के लिए संदर्भित सुरक्षित सीमा मानी जाती है। यदि आवाज का स्तर 90 डेसिबल हो जाए, तो यह अवधि घटकर सप्ताह में केवल 4 घंटे रह जाती है। इसका मतलब है कि यांत्रिक आवाज थोड़ी भी बढ़ जाए तो कान की सुरक्षा प्रणाली असुरक्षित हो जाती है।

संगीत सुनिए लेकिन: संगीत जरूर सुनिए, लेकिन संगीत हमेशा सुनने की शक्ति बचाकर सुनिए। आवाज कम रखिए, चार-चार घंटे तक लगातार संगीत ही नहीं किसी भी वॉयस को सुनने से बचिए। हर आधे या एक घंटे बाद कानों को आराम दीजिए। आखिरकार संगीत जिंदगी को खूबसूरत बनाने का जरिया है, लेकिन इससे अपनी जिंदगी में सुनने की शक्ति को खत्म करके बदसूरत न बनाएं। *



'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां' गीत दृश्य



फिल्म 'बागबान' का इमोशनल सीन



'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा' गीत दृश्य

सिने ट्रेंड
मनोज प्रकाश

हिंदी फिल्मों में दांपत्य प्रेम को अलग-अलग तरह से प्रस्तुत किया जाता रहा है। कई ऐसे गीत रचे गए हैं, जो आज भी करवा चौथ जैसे पर्व पर जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं। ऐसी ही कुछ फिल्मों और दांपत्य प्रेम पर केंद्रित गीतों पर एक नजर।

फिल्मी गीतों में खूब दमकता रहा है दांपत्य प्रेम

पारिवारिक, धार्मिक ही नहीं हर तरह की हिंदी फिल्मों में पति-पत्नी के रिश्ते को बहुत महत्व दिया जाता रहा है। खासतौर पर दांपत्य जीवन खुशहाल बनाने के लिए पत्नी के द्वारा किए जाने वाले त्याग और समर्पण को भी फिल्मों में अलग-अलग नजरिए से फिल्माया जाता रहा है। पत्नी के द्वारा अपने सुहाग यानी पति के लिए व्रत की बात आती है तो बॉलीवुड में इस पर भी केंद्रित कुछ फिल्मी दृश्य और एक से बढ़कर सुंदर गीत रचे गए हैं।

यादगार हैं ये गीत: पति-पत्नी के प्रेम को समर्पित करवा चौथ के गीतों की बात करें तो 65 वर्ष पहले बनी फिल्म 'बहू-बेटी' का एक गीत सबसे पहले याद आता है। माला सिन्हा, अशोक कुमार, जॉय मुखर्जी और मुमताज स्टारर इस फिल्म में आशा भोंसले के गाए गीत 'आज है करवा चौथ सखी री, मांग ले सुख दान' को आज भी याद किया जाता है। इसमें करवा चौथ के पर्व को जिस तरह से उत्सव जैसा दिखाया गया, वह बाद की फिल्मों के लिए नजीर बना। इसके बाद भी कुछ फिल्मों में करवा चौथ से जुड़े गीत या कहानी पर आधारित दृश्यों ने पति के प्रति पत्नी के प्रेम, निष्ठा, समर्पण, त्याग और सम्मान को प्रभावी तरीके से पेश किया जाता रहा है।

वर्ष 1969 में रिलीज हुई फिल्म 'सुहागरात' का गीत 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे', भी दांपत्य प्रेम को बहुत खूबसूरती से प्रकट करता है। इसी तरह वर्ष 1973 में रिलीज हुई फिल्म 'सौदागर' में फूल बानो (पद्मा खन्ना) अपने पति मोती (अमिताभ बच्चन) के लिए जब 'सजना है मुझे सजना के लिए...' गाती हैं तो एक सजी-धजी पत्नी का चेहरा सामने आ जाता है, जो अपने पति को खुशी देने के लिए सजती-संवरती है। भले इसे करवा चौथ से सीधा जोड़ा नहीं जाए पर यह हर करवा चौथ पर उन गीतों में शामिल होता है, जो इस दिन जरूर गाए-गुनगुनाए जाते हैं।

कुछ इसी तरह का एक गाना फिल्म 'गीत गाता चल' का है, जो 51 वर्ष पहले आई थी। 'मैं वही, दर्पण वही, न जाने ये क्या हो गया कि सब कुछ लागे नया-नया..' में सारिका-सचिन की जोड़ी एकदम से भारतीयता में रची-बसी नजर आती है। पूरी तरह लगता है कि दांपत्य प्रेम को समर्पित है यह गीत।

ये फिल्में भी हैं यादगार: करवा चौथ को पूरी तरह से समर्पित फिल्म 'करवा चौथ' 1978 में रामलाल हंस ने बनाई थी, जो इस पर्व के लिए पहली फिल्म मानी जाती है। आशीष कुमार, कामिनी कौशल, आद्या, पद्म चव्हाण, रमेश देव और हेलन ने इसमें अभिनय किया था। उषा मंगेशकर के गाए गीत 'करवा चौथ का व्रत ऐसा', इस मूवी का मुख्य गीत था। इसमें हेलन ने अपनी सखियों के साथ पारंपरिक तौर तरीके से करवा चौथ को सेलिब्रेट किया।



'करवाचौथ का व्रत ऐसा' गीत मे हेलन

करवा चौथ पर दांपत्य प्रेम को प्रभावी तरीके से प्रेजेंट करने वाली दो और फिल्मों का जिक्र किया जा सकता है। ये हैं- 'मांग भरो सजना' और 'सुहागरात'। सन 1980 में जब 'मांग भरो सजना' में पति का दो पत्नियों के बीच में संतुलन बनाने का प्रयास करना, उस दौर में महिलाओं के बीच सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया था। रेखा और मौसमी चटर्जी के किरदारों ने इसमें जीतेंद्र के लिए व्रत रखकर पूरे समर्पण के साथ इस गीत के फिल्मांकन को प्रस्तुत किया है। आशा भोसले तथा लता मंगेशकर की आवाज में गाया यह गीत, 'दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे...' आज भी करवा चौथ के अवसर पर विवाहित महिलाएं सुनना पसंद करती हैं।

पति के साथ को समर्पित भावुक गीत: फिल्म 'सुहागरात' का गीत, 'गंगा मैया में जब तक पानी रहे, मेरे सजना तेरी जिंदगानी रहे...' पत्नी का पति के प्रति प्रेम की पराकाष्ठा को दिखाता है। उसका मन सूरज-चांद से भी नहीं भर रहा है तो वह पति की जिंदगानी के लिए उससे आगे निकल जाती है। उसे लगता है कि सूरज चांद तो छिप सकते हैं पर मां गंगा कभी नहीं सूखेंगी और वह उससे अपने पति का जीवन जोड़ देती है। दांपत्य प्रेम की पराकाष्ठा व्यक्त करता है यह गीत।

ये गीत-दृश्य भी हैं दांपत्य को समर्पित: नए दौर की फिल्मों में भी कई गीत ऐसे रचे गए, जिन्होंने दर्शकों को करवा चौथ के प्रति संवेदनशील बनाया और इस पर्व की महत्ता को नया मोड़ दिया। इनमें 'दिल वाले दुल्हनिया ले जाएंगे' का 'घर आ जा परदेसी', 'कभी खुशी कभी गम' का 'बोले चूड़ियां', 'हम दिल दे चुके सनम' का 'चांद छुपा बादल में', 'जख्म' का 'गली में आज चांद निकला' के अतिरिक्त भी कई ऐसे गीत हैं, जो भले ही करवा चौथ का आधार नहीं लेते हों पर इस दिन विवाहित महिलाएं गुनगुनाती नजर आती हैं। हां, 'राजा हिंदुस्तानी' का वह सीन भी इस दिन अवश्य याद आता है, जिसमें करिश्मा कपूर अपने पति के लिए निर्जला व्रत रखती है और एक भावनात्तक मोड़ इसका एंड करता है। ठीक वैसे ही जैसे करवा चौथ पर चांद देखने के बाद पति-पत्नी एक-दूसरे को देखते हुए ऐसे लगते हैं जैसे कह रहे हों सात जन्मों का रिश्ता है हमारा। यहां फिल्म 'बागबान' का जिक्र करना भी जरूरी है। इसमें अमिताभ का किरदार, अपनी पत्नी (हेमा मालिनी) के लिए व्रत रखता है। दोनों एक-दूसरे से दूर रहकर भी दांपत्य के अटूट प्रेम बंधन में जुड़े दिखते हैं। *

पर्व / आर. सी. शर्मा

शरद पूर्णिमा चांदनी रात में भक्ति की दिव्यता



भारतीय सनातन परंपरा में पर्व-त्योहार आत्मा को परमात्मा से जोड़ने वाले आध्यात्मिक सोपान भी होते हैं। इन्हीं पावन पर्वों में शरद पूर्णिमा का विशिष्ट स्थान है। आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व प्रकृति की अनुपम छटा, चंद्रमा की धवल चांदनी, श्रीकृष्ण की महारास लीला और मां लक्ष्मी की आराधना के कारण विशेष धार्मिक महत्व रखता है।

महारास की दिव्य रात्रि: शरद पूर्णिमा का सर्वाधिक भावपूर्ण आध्यात्मिक संदर्भ भगवान श्रीकृष्ण की महारास लीला से जुड़ा है। श्रीमद्भागवत महापुराण के दशम स्कंद में वर्णित रासपंचाध्याई भगवान के माधुर्य स्वरूप और गोपियों की अनन्य भक्ति का अद्भुत आख्यान प्रस्तुत करती है। शरद ऋतु की निर्मल रात्रि, यमुना का तट, वृंदावन की कुंज गलियां और मुरली की मधुर तान यह समूचा परिवेश भक्ति साहित्य में दिव्यता के अनुपम बिंब के रूप में प्रतिष्ठित है। भागवत परंपरा में रासलीला को लौकिक प्रेम की सीमाओं से ऊपर उठकर ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण के भाव से देखा जाता है। महारास का आध्यात्मिक मर्म यही है कि जब अहंकार, स्वार्थ और सांसारिक आसक्ति का आवरण हटता है, तब हृदय में अनन्य भक्ति का प्रकाश प्रकट होता है। इस दृष्टि से शरद पूर्णिमा केवल चंद्रदर्शन की रात्रि नहीं बल्कि कृष्णमय चेतना में निमग्न होने का पावन अवसर है। मंदिरों में ठाकुरजी का विशेष श्रृंगार, भजन-कीर्तन और रासलीला के आयोजन इसी भक्तिभाव को साकार करते हैं।

चांदनी में अमृतवर्षा: सनातन धर्म में चंद्रमा को मन का अधिष्ठाता माना गया है। वैदिक एवं पौराणिक परंपराओं में चंद्रदेव की उपासना, सोम की अवधारणा और शीतलता के प्रतीक के रूप में चंद्रमा का विशेष महत्त्व है। शरद पूर्णिमा की रात्रि में आकाश में पूर्ण चंद्रमा अपनी उज्ज्वल आभा बिखेरता है। वर्षा ऋतु के पश्चात निर्मल आकाश और स्वच्छ वातावरण इस प्राकृतिक सौंदर्य को और भी मनोहारी बना देते हैं। लोकमान्यता है कि इस रात्रि चंद्रमा की किरणों से अमृत बरसता है। इसी विश्वास के कारण अनेक घरों में खीर बनाकर खुले आकाश के नीचे चंद्रकिरणों में रखने और अगले दिन उसे प्रसाद रूप में ग्रहण करने की परंपरा प्रचलित है। इस परंपरा में प्रकृति के प्रति कृतज्ञता, पारिवारिक सहभागिता और पवित्र भावना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

व्रत-पूजन: शरद पूर्णिमा पर श्रद्धालु अपनी पारिवारिक परंपरा और सामर्थ्य के अनुसार व्रत रखते हैं। प्रातः स्नान के उपरांत देवपूजन, इष्टदेव का स्मरण और दान-पुण्य किया जाता है। संध्याकाल में चंद्रदर्शन के पश्चात चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित करने की परंपरा भी अनेक स्थानों पर प्रचलित है। मंदिरों में विशेष भोग, दीपदान, हरिनाम संकीर्तन और धार्मिक प्रवचन आयोजित किए जाते हैं। कहीं श्रीकृष्ण को श्वेत वस्त्रों और पुष्पों से सजाया जाता है, तो कहीं रात्रि में भजन-मंडलियां भक्तिरस का संचार करती हैं। इन समस्त अनुष्ठानों का मूल उद्देश्य अंतःकरण की शुद्धि और ईश्वर के प्रति श्रद्धा का संवर्धन है। *